• जयपुर, शुक्रवार 27 दिसंबर 24 • वर्ष 14 • अंक 129 • पृष्ठ : 8 • मूल्य : 1 रुपये

www.chamaktarajasthan.in| Email : chamaktarajasthan8789@gmail.com

डाक पंजीयन संख्याः RJ/JPC/D19/2024-25

RNI. No. RAJHIND/2011/40950

दैनिक राज्य तथा केंद्र द्वारा मान्यता प्राप्त

सच के साथ मजबूती से बढ़ाये क़दम

चमकता राजस्थान

जयपुर से प्रकाशित एवं प्रसारित

विज्ञापन के लिए : 93145 05000

अजमेर, सीकर, झुंझनुं, सवाईमाधोपुर, चित्तौड़गढ़, बूँदी, धौलपुर, हिंडौन, भरतपुर, झालावाड़, जोधपुर, बीकानेर से प्रसारित

सुविचार

''सत्य को हज़ार तरीकों से बताया जा सकता है, फिर भी हर एक सत्य ही होगा।''

● **स्वामी विवेकानंद**

पेज @3 मुख्यमंत्री भजनलाल ने ली सड़क सुरक्षा महत्वपूर्ण समीक्षा बैठक...

पेज @4 कुरैशी समाज चल पड़ा सुधार की डगर पर,शादीयों के नाम पर अनावश्यक...

पेज @8 जयपुर विकास प्राधिकरण बना धृतराष्ट्र, खेल रहा है अवैध निर्माण ...

पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह का निधन

केंद्र सरकार ने 7 दिन का राष्ट्रीय शोक घोषित किया

चमकता राजस्थान

जयपुर/ नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह (92 साल) की उम्र में निधन हो गया। गुरुवार रात अचानक तबीयत बिगड़ गई थी। उन्हें दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) के इमरजेंसी वार्ड में भर्ती कराया गया था। जहां रात 9:51 बजे उन्होंने आखिरी सांस ली वें लंबे समय से बीमार थे इसके बाद रॉबर्ट वाड्रा, सलमान खुर्शीद, पप्पू यादव और मनोज झा ने उनके निधन के बारे में एक्स पर पोस्ट किया है। सिंह के निधन के बाद कांग्रेस में शोक की लहर दौड़ गई। पूर्व पीएम मनमोहन सिंह के निधन के बाद कर्नाटक के बेलगावी में चल रही कांग्रेस वर्किंग कमेटी (सीडब्ल्यूसी) मीटिंग रद्द कर दी है। इसके साथ ही 27 दिसंबर को होने वाले सभी प्रोग्राम भी रद्द कर दिए गए हैं। वहीं कांग्रेस नेता राहुल गांधी और पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे बेलगावी से दिल्ली रवाना हो गए हैं। एम्स के बाहर सिक्योरिटी बढ़ा दी गई है। आपको बता दें कि वे 2004 में देश के 14वें प्रधानमंत्री बने और मई 2014 तक इस पद पर दो टर्म रहे। वे देश के पहले सिख और चौथे सबसे लंबे समय तक प्रधानमंत्री रहे।केंद्र सरकार ने 7 दिन का राष्ट्रीय शोक घोषित किया है। साथ ही कल के सभी कार्यक्रम कैंसिल कर दिए गए हैं। डॉ. मनमोहन सिंह का अंतिम संस्कार राजकीय सम्मान के साथ किया जाएगा मनमोहन सिंह के निधन पर राहुल ने लिखा- मैंने अपना मार्गदर्शक और गुरु खो दिया है। इस बीच, कर्नाटक के बेलगावी में चल रही कांग्रेस वर्किंग कमेटी (उहउ) मीटिंग रद्द कर दी गई है। प्रियंका गांधी भी पहुंच गई। इसके बाद सोनिया गांधी भी अस्पताल पहुंची।पूर्व पीएम मनमोहन सिंह अविभाजित भारत के पंजाब के गाह गांव में पैदा हुए थे। मनमोहन सिंह को भारत की अर्थव्यवस्था में उदारीकरण लाने का श्रेय दिया जाता है। वे पीवी नरसिम्हा राव सरकार (1991- 96) में वित्त मंत्री रहे थे। पीवी नरसिम्हा राव ने तब एक आला अफसर पीसी अलेक्जेंडर की सलाह पर वित्त मंत्री बनाया था। नरसिम्हा ने मनमोहन से कहा था कि अगर आप सफल हुए तो इसका श्रेय हम दोनों को जाएगा, अगर आप असफल हुए तो सिर्फ आपकी जिम्मेदारी होगी।

- **देश ने महान अर्थशास्त्री और सफल राजनीतिज्ञ को खो दिया**
- **92 साल की उम्र में दिल्ली के एम्स में ली आखिरी सांस**
- **कांग्रेस नेता राहुल गांधी व खड़गे कर्नाटक से दिल्ली रवाना**

मनमोहन सिंह RBI के गवर्नर थे फिर 10 साल देश के पीएम रहे

मनमोहन सिंह का जन्म 26 सितंबर 1932 को अविभाजित भारत के पंजाब के गाह (अब पाकिस्तान) में हुआ था। उनके पिता का नाम गुरुमुख सिंह और मां का नाम अमृत कौर था।देश के विभाजन के बाद उनका परिवार भारत चला आया। यहां पंजाब विश्वविद्यालय से उन्होंने ग्रेजुएशन और PG पूरा किया। कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी से Ph.D और ऑक्सफोर्ड से डी. फिल भी की।मनमोहन सिंह पंजाब विश्वविद्यालय और दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में प्रोफेसर रहे। 1966-1969 के दौरान संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन के लिए आर्थिक मामलों के अधिकारी के रूप में चुने गए थे।1971 में मनमोहन को वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय में आर्थिक सलाहकार के तौर पर नियुक्त किया गया। 1972 में उन्हें वित्त मंत्रालय में मुख्य आर्थिक सलाहकार बनाया गया।इसके बाद वे योजना आयोग के उपाध्यक्ष, 1982 से 1985 तक रिजर्व बैंक के गवर्नर, प्रधानमंत्री के आर्थिक सलाहकार और विश्वविद्यालय अनुदान (UGC) आयोग के अध्यक्ष भी रहे। 1991 में असम से राज्यसभा सदस्य चुने गए। इसके बाद वह साल 1995, 2001, 2007 और 2013 में फिर राज्यसभा सदस्य रहे।1998 से 2004 तक जब भाजपा सत्ता में थी, तब वही राज्यसभा में विपक्ष के नेता थे। 1999 में उन्होंने दक्षिणी दिल्ली से लोकसभा चुनाव लड़ा, लेकिन भाजपा के विजय कुमार मल्होत्रा से हार गए।1991 से 1996 तक प्रधानमंत्री नरसिम्हाराव सरकार में वित्तमंत्री रहे। 2004 और 2009 में 10 साल तक देश के प्रधानमंत्री रहे।मनमोहन सिंह के परिवार में पत्नी गुरशरण कौर और तीन बेटियां हैं।

डॉ. मनमोहन सिंह के 5 ऐतिहासिक काम

(1)जून 1991: वैश्वीकरण और उदारीकरण,(2)जून 2005: सूचना का अधिकार,(3)सितंबर 2005: रोजगार गारंटी योजना,(4)जनवरी 2009: पहचान के लिए आधार कार्ड,(5)मार्च 2006: अमेरिका से न्यूक्लियर डील। कांग्रेस के सभी आधिकारिक कार्यक्रम रद्द, पार्टी का झंडा झुका रहेगा। केसी वेणुगोपाल ने लिखा है, 'दिवंगत पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह जी के सम्मान में स्थापना दिवस समारोह समेत भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सभी आधिकारिक कार्यक्रम अगले 7 दिनों के लिए रद्द कर दिए गए हैं। इसमें सभी आंदोलन और आउटरीच कार्यक्रम शामिल हैं। पार्टी के कार्यक्रम 3 जनवरी 2025 को फिर से शुरू होंगे। शोक की इस अवधि के दौरान पार्टी का झंडा आधा झुका रहेगा।'

न्यूज अपडेट

3 युवकों पर ताबड़तोड़ फायरिंग : 2 की मौत, 1 की हालत नाजुक

यमुनानगर/एजेंसी। हरियाणा के यमुनानगर में गुरुवार सुबह 3 युवकों पर नकाबपोश बाइक सवारों ने ताबड़तोड़ फायरिंग कर दी। इसमें 2 युवकों की मौत हो गई, जबकि एक की हालत गंभीर है। उसे निजी अस्पताल में भर्ती करवाया गया है। मामला सुबह करीब साढ़े 8 बजे रादौर के गांव खेडी लक्खा सिंह में सामने आया। तीनों युवक पावर नाम के जिम में एक्सरसाइज करने आए थे। वह एक्सरसाइज करने के बाद घर जाने के लिए जैसे ही जिम से बाहर निकले तो हमलावरों ने उन पर 15 से 20 राउंड फायरिंग कर दी।

बीपीएससी अभ्यर्थियों पर लाठीचार्ज, लालू यादव बोले ये गलत

पटना/एजेंसी। बिहार लोक सेवा आयोग (बीपीएससी) की 70वीं पीटी परीक्षा रद्द करने की मांग कर रहे अभ्यर्थियों पर लाठीचार्ज को लेकर राजनीति गर्म हो गयी है। विपक्ष के नेता इसे लेकर सरकार को घेरने में जुटे हैं। इस बीच, राजद के प्रमुख और बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री लालू यादव ने छात्रों पर लाठी चार्ज को गलत बताया है। पत्रकारों ने गुरुवार को जब बीपीएससी अभ्यर्थियों पर हुए लाठीचार्ज को लेकर राजद अध्यक्ष लालू यादव से सवाल किया तब उन्होंने कहा कि छात्रों पर लाठी चार्ज नहीं करना चाहिए। गलत बात है।

साहिबजादों के नाम पर छात्रावास के लिए भाजपा सरकार करेगी भूमि आवंटनः सीएम भजनलाल शर्मा

बाबा जोरावर सिंह और बाबा फतेह सिंह की शहादत हम सभी के लिए प्रेरणा स्त्रोतः सीएम भजनलाल शर्मा

चमकता राजस्थान

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने वीर बाल दिवस के अवसर पर भाजपा प्रदेश कार्यालय में शब्द कीर्तन कार्यक्रम में शिरकत की। इस दौरान मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने बड़ी घोषणा करते हुए कहा कि भाजपा सरकार साहिबजादों के नाम पर छात्रावास के लिए सिख समाज को जमीन का आवंटन करेगी। उन्होंने कहा कि सिख धर्म के दसवें गुरू गोविंद सिंह के साहिबजादों ने मातृ भूमि के लिए, अपनी संस्कृति और विचारों के लिए दृढ़ता के साथ अपना जीवन बलिदान कर दिया, ऐसे में उनको मेरा कोटि-कोटि नमन। बाबा जोरावर सिंह और बाबा फतेह सिंह ने धर्म की रक्षा और सत्य के लिए अल्प आयु में ही अपने प्राण न्यौछावर कर दिए, यह हम सब के लिए प्रेरणा का स्त्रोत है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि अत्याचारी मुगल शासकों ने उन्हें झुकाने और उनका धर्म परिवर्तन करवाने के लिए अनेक अत्याचार किए लेकिन राष्ट्र और धर्म की रक्षा के लिए साहिबजादो ने हंसते हुए मृत्यु को गले लगा लिया। साहिबजादो की शहादत हमें बताती है कि धर्म के मार्ग पर चलने के लिए उम्र नहीं, दृढ संकल्प और साहस की आवश्यकता होती है। सीएम शर्मा ने कहा कि ऐसी माता को भी नमन जिसने अपने बच्चों में राष्ट्र, धर्म के लिए ऐसे संस्कार और शिक्षा दी।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि भाजपा का संकल्प है कि सिख धर्म के इन साहिबजादों के बलिदान को देश की युवा पीढ़ी को बताया जाए और देश के युवा वर्ग को इनके आदर्शों पर चलने के लिए प्रेरित किया जाए। भाजपा ने हमेशा सिख धर्म और उनकी विरासत का सम्मान किया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने साहिबजादों के शहादत को राष्ट्रीय बाल दिवस घोषित कर उनकी स्मृति को चिर स्थाई बनाने की दिशा में सराहनीय कार्य किया है और प्रधानमंत्री मोदी का यह प्रयास हमारी सांस्कृतिक धरोवर को संजोने और आने वाली पीढ़ी तक पहुंचाने के लिए महत्वपूर्ण कदम है। हमें भी वीर साहिबजादों के आदर्शों को अपने जीवन में आत्मसात करना चाहिए।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने कहा कि मुगलों ने इस्लाम धर्म कबुल करवाने के लिए साहिबजादों को यातनाएं दी, यह मासूम बच्चों पर दुख की पराकाष्ठा थी। मुगलों ने इन्हें यातनाएं देकर झुकने के लिए मजबूर किया ,लेकिन उन्होंने सिर झुकाने की बजाय अपने प्राण न्यौछावर करना उचित समझा। ऐसे वीर बाबा जोरावर सिंह और बाबा फतेह सिंह हम सभी के लिए प्रेरणा के स्त्रोत है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी इनकी बहादुरी को महसूस किया और बाल दिवस मनाने की घोषणा कर दी। एक ओर नेहरू के जन्म दिवस पर बाल दिवस मनाते थे, लेकिन पीएम ने साहिबजादों के शहादत पर बाल दिवस मनाने की घोषणा की। यह परिवर्तन भी स्वागत योग्य है।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने कहा कि आज समय के अनुसार हमें जाग्रत रहने की आवश्यकता है, समाज को मुगलों द्वारा किए गए आतंक को बताने की आवश्यकता है, और हम सभी को संगठित और जागरूक रहने की आवश्यकता है। अगर हम सभी एक रहकर समाज को संगठित कर के दृढ रहेंगे तो किसी की हिम्मत नहीं होगी हमारी ओर गलत नजर से देखे।

कार्यक्रम समिति के प्रदेश संयोजक प्रणवेंद्र शर्मा ने बताया कि भाजपा प्रदेश कार्यालय के साथ प्रदेशभर में वीर बाल दिवस पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किए गए है। भाजपा मुख्यालय पर आयोजित कार्यक्रम में भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष सी आर चौधरी, नारायण पंचारिया, सरकार अजयपाल सिंह, भाजपा महामंत्री एवं विधायक जितेंद्र गोठवाल, प्रदेश मंत्री भूपेंद्र सैनी, अजीत मांडण, वासूदेव चावला, पूर्व सांसद रामचरण बोहरा, विधायक गोपाल शर्मा, बाल मुकुंदाचार्य, जयपुर हेरिटेज मेयर कुसुम यादव, भाजपा कार्यालय प्रभारी मुकेश पारीक, सह प्रभारी भवानी शंकर शर्मा सहित भाजपा पदाधिकारी और कार्यकर्ता मौजूद रहे। इस दौरान खालसा पंथ की स्कॉलर डॉ मंजित कौर ने साहिबजादों की शौर्य गाथा सुनाई। इस दौरान समिति के सह संयोजक जितेंद्र मीणा, डॉ अशोक यादव, विक्रम सिंह शेखावत, डॉ चन्द्रदीप हाडा ने कार्यक्रम में व्यवस्था संभाली।

मुगलों ने वीर साहिबजादों को दी यातनाएं, मोदी ने इनकी शहादत पर घोषित किया वीर बाल दिवसः मदन राठौड़

दिल्ली-एनसीआर में बारिश का येलो अलर्ट, घने कोहरे से होगा सामना

नई दिल्ली/एजेंसी

मौसम विभाग ने दिल्ली-एनसीआर में तीन दिनों तक बारिश का येलो अलर्ट जारी किया है। मौसम विभाग के मुताबिक एनसीआर के लोगों को 27 और 28 दिसंबर को तेज बारिश और तेज हवा का सामना करना पड़ सकता है। इस दौरान अधिकतम और न्यूनतम तापमान में ज्यादा गिरावट देखने को नहीं मिलेगी।

बारिश के बाद लोगों को घने कोहरे और तापमान में गिरावट का सामना करना पड़ेगा। मौसम विभाग की ओर से जारी किए गए अलर्ट के मुताबिक 27 और 28 दिसंबर को तूफान के साथ तेज बारिश हो सकती है।

मौसम विभाग ने बताया कि उस दौरान न्यूनतम तापमान भी तकरीबन 3 से 4 डिग्री बढ़ जाएगा। इसके बाद वह 11 डिग्री पर पहुंच जाएगा जबकि अधिकतम तापमान 23 डिग्री बने रहने की संभावना है। इसके बाद 29 से 31 दिसंबर तक घना कोहरा छाया रहेगा और इस दौरान एक बार फिर अधिकतम और न्यूनतम तापमान में गिरावट दर्ज की जाएगी।

मौसम विभाग के मुताबिक 29 दिसंबर को घना कोहरा छाया रहेगा। इस दौरान अधिकतम तापमान 21 और न्यूनतम तापमान 8 डिग्री रहने की संभावना है। वहीं, 30 दिसंबर को भी घना कोहरा छाया रहेगा। हालांकि, इस दिन अधिकतम तापमान 22 डिग्री और न्यूनतम तापमान 7 डिग्री रहने की संभावना है।

साल के अंतिम दिन यानी 31 दिसंबर को घने कोहरे की संभावना जताई गई है। इस दिन अधिकतम तापमान 22 डिग्री रहने और न्यूनतम तापमान 6 डिग्री तक रह सकती है। मौसम विभाग के मुताबिक पहाड़ों पर हो रही लगातार बर्फबारी और पश्चिमी विक्षोभ के चलते ही मैदानी इलाकों में भी लोगों को ठिठुरन भरी सर्दी का सामना करना पड़ेगा।

पीएम मोदी ने वीर बाल दिवस पर किया सुपोषित ग्राम पंचायत अभियान का शुभारंभ

नई दिल्ली/एजेंसी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गुरुवार को भारत मंडपम में आयोजित तीसरे वीर बाल दिवस कार्यक्रम में शिरकत की। उन्होंने साहिबजादों की वीरता और बलिदान को याद करते हुए इस दिन की अहमियत पर प्रकाश डाला। इस मौके पर प्रधानमंत्री ने सुपोषित ग्राम पंचायत अभियान का भी शुभारंभ किया, जिसका उद्देश्य कुपोषण को समाप्त करना और विकसित भारत की नींव तैयार करना है। पीएम मोदी ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वीर बाल दिवस के महत्व को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि यह दिन अब करोड़ों भारतीयों के लिए राष्ट्रीय प्रेरणा का पर्व बन चुका है। इस दिन ने न केवल साहिबजादों की वीरता की गाथाओं को जीवित रखा है, बल्कि यह लाखों बच्चों और युवाओं को अदम्य साहस और समर्पण के लिए प्रेरित भी करता है। इस दौरान उन्होंने विशेष रूप से उन 17 बच्चों की सराहना की।

भूतपूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह का निधनः भारत ने खोया एक महान अर्थशास्त्री और दूरदर्शी नेता

जयपुर! भारत के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह का निधन भारतीय राजनीति और आर्थिक जगत के लिए एक अपूरणीय क्षति है। डॉ. सिंह, जिनका नाम न केवल भारत बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी सम्मान और प्रतिष्ठा से लिया जाता है, अपने दूरदर्शी नेतृत्व, सादगी और गहन बौद्धिक क्षमता के लिए जाने जाते थे। उनके निधन से भारत ने न केवल एक कुशल प्रशासक खो दिया है, बल्कि एक ऐसा नेता खोया है जिसने आर्थिक सुधारों और राष्ट्रीय विकास की दिशा में अभूतपूर्व योगदान दिया।डॉ. मनमोहन सिंह की जीवन यात्रा की शुरुआत ही शैक्षणिक क्षेत्र में उनके असाधारण प्रदर्शन से हुई। उनका जन्म 26 सितंबर 1932 को हुआ था और उन्होंने शिक्षा के हर चरण में अपनी योग्यता का परिचय दिया। उन्होंने 1948 में पंजाब विश्वविद्यालय से मैट्रिक की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। इसके बाद 1950 में इंटरमीडिएट और 1952 में बी.ए. (ऑनर्स) अर्थशास्त्र में प्रथम स्थान प्राप्त किया जिसके लिए उन्हें यूनिवर्सिटी मेडल सम्मानित किया गया। उन्होंने 1954 में पंजाब विश्वविद्यालय से एम.ए. (अर्थशास्त्र) प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया, जहां उन्होंने विश्वविद्यालय में पहला स्थान प्राप्त किया जिसके लिए उन्हें उत्तर चंद कपूर मेडल से सम्मानित किया गया। इसके बाद उन्होंने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से पढ़ाई की, जहां उन्हें एडम स्मिथ प्राइज और राइट्स प्राइज जैसे प्रतिष्ठित पुरस्कार मिले। 1957 में, उन्हें कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में रेनबरी स्कॉलर के रूप में चुना गया। उनके ज्ञान की गहराई और योगदान को देखते हुए उन्हें सेंट जॉन्स कॉलेज, कैम्ब्रिज का ऑनरेरी फेलो बनाया गया। 1957 में उन्होंने प्रतिष्ठित कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से इकोनॉमिक ट्राइपोज़ प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण किया और फिर 1962 में ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के नफील्ड कॉलेज से डी. फिल. की उपाधि प्राप्त की। उनकी थीसिस ₹इंडिया की निर्यात प्रवृत्तियां और आत्मनिर्भर विकास की संभावनाएं₹ ने उन्हें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्याति दिलाई।

डॉ. सिंह का करियर शिक्षा से शुरू हुआ, लेकिन उनका असली योगदान प्रशासन और राजनीति में था। 1957 से 1965 तक उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय में वरिष्ठ व्याख्याता, रीडर और प्रोफेसर के रूप में सेवा दी। इसके बाद वे संयुक्त राष्ट्र के व्यापार और विकास संगठन (वठउळअऊ) में गए, जहां 1966 से 1969 तक उन्होंने आर्थिक मामलों के अधिकारी और ₹फाइनेंसिंग फॉर ट्रेडर₹ विभाग के प्रमुख के रूप में काम किया। 1969 में भारत लौटने के बाद उन्होंने दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में अंतरराष्ट्रीय व्यापार के प्रोफेसर के रूप में कार्य किया। इसके बाद उनके जीवन में ऐसे कई महत्वपूर्ण पद आए जिन्होंने उनकी आर्थिक विशेषज्ञता और दूरदर्शिता को प्रदर्शित किया। वे 1971-72 में विदेश व्यापार मंत्रालय के आर्थिक सलाहकार, 1972-76 में भारत सरकार के मुख्य आर्थिक सलाहकार और 1976-80 में वित्त मंत्रालय में सचिव रहे। डॉ. सिंह ने 1982 से 1985 तक भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर के रूप में कार्य किया और इस दौरान देश के मौद्रिक और वित्तीय नीतियों को स्थिरता प्रदान की। इसके बाद वे योजना आयोग के उपाध्यक्ष (1985-87) बने। 1987 से 1990 तक वे दक्षिण आयोग के महासचिव और आयुक्त के रूप में जिनेवा में तैनात रहे। यह पद उनकी वैश्विक दृष्टि और विकासशील देशों के लिए उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। 1990 से 1991 तक वे प्रधानमंत्री के आर्थिक मामलों के सलाहकार बने। 1991 में, जब भारत आर्थिक संकट से जूझ रहा था, डॉ. मनमोहन सिंह को वित्त मंत्री बनाया गया। उनके कार्यकाल में भारत ने आर्थिक सुधारों की शुरुआत की, जिसने देश की अर्थव्यवस्था को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाया। उन्होंने लाइसेंस राज को समाप्त किया, विदेशी निवेश को बढ़ावा दिया और भारतीय अर्थव्यवस्था को उदारीकरण की ओर ले गए। इन सुधारों ने न केवल भारत को आर्थिक संकट से उबारा, बल्कि देश को विकास की तेज रफ्तार पर भी ले गए। 22 मई 2004 को डॉ. मनमोहन सिंह ने भारत के 14वें प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली। वे 2004 से 2014 तक लगातार दो कार्यकाल के लिए प्रधानमंत्री रहे। इस दौरान उन्होंने ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (टऋछफएऋअ), सूचना का अधिकार (फळक) और आधार कार्ड जैसी योजनाओं की शुरुआत की, जो सामाजिक और आर्थिक सुधार के स्तंभ बने। उनके नेतृत्व में भारत ने आर्थिक विकास की उच्च दर दर्ज की और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी स्थिति मजबूत की। उनके कार्यकाल में भारत-अमेरिका परमाणु समझौता भी हुआ, जो उनकी दूरदर्शिता और राजनीतिक साहस का परिचायक था। डॉ. मनमोहन सिंह को उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए जीवन भर कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। 1987 में, उन्हें भारत के दूसरे सबसे बड़े नागरिक सम्मान पद्म विभूषण से नवाजा गया। उनकी आर्थिक विशेषज्ञता और नेतृत्व के लिए उन्हें 1997 में जापान के निक्केई एशिया प्राइज से सम्मानित किया गया। इसके अलावा, उन्होंने लोकमान्य तिलक पुरस्कार (1997), केएस हेगड़े फाउंडेशन अवार्ड (1997), और एच. एच. कांची श्री परमाचार्य अवार्ड (1999) जैसे प्रतिष्ठित पुरस्कार भी प्राप्त किए। शिक्षा और शोध के क्षेत्र में भी उनके योगदान को सराहा गया। उन्हें दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में ऑनरेरी प्रोफेसर के रूप में सम्मानित किया गया।डॉ. मनमोहन सिंह के व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता उनकी सादगी और ईमानदारी थी। वे सत्ता में रहते हुए भी हमेशा विनम्र और शालीन बने रहे। उन्होंने राजनीति को कभी भी अपनी व्यक्तिगत पहचान से ऊपर नहीं रखा और अपने पूरे करियर में निस्वार्थ रूप से देश की सेवा की। डॉ. मनमोहन सिंह का निधन भारतीय राजनीति, अर्थव्यवस्था और समाज के लिए एक युग का अंत है। उनकी दूरदर्शिता, निष्ठा और योगदान को हमेशा याद किया जाएगा। उनकी जीवन यात्रा से यह स्पष्ट होता है कि एक व्यक्ति, जो शैक्षणिक क्षेत्र से राजनीति में आया, कैसे देश के आर्थिक और सामाजिक ढांचे को मजबूत कर सकता है। उनका जीवन और कार्य हमें यह सिखाता है कि कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य, ज्ञान और निष्ठा से न केवल व्यक्तिगत बल्कि राष्ट्रीय प्रगति संभव है। डॉ. मनमोहन सिंह का जीवन भारत के हर नागरिक के लिए प्रेरणा का स्रोत रहेगा। उनके निधन से उपजे शून्य को भरना असंभव है, लेकिन उनकी विरासत और विचार हमेशा हमारे साथ रहेंगे।

खलील कुरैशी
संपादक
दैनिक चमकता राजस्थान

भागवत को क्यों दी जा रही है धर्म गुरु नहीं बनने की नसीहत

अपना देश एक रंग बिरंगे गुलदस्ते की तरह है। अनेकता में एकता जिसकी शक्ति है। यहां विभिन्न धर्म और उनकी अलग–अलग पूजा पद्धति देखने को मिलती है तो देश का सामाजिक और जातीय ताना बाना भी काफी बंटा हुआ हुआ है। ऐसे में किसी भी मुद्दे पर किसी तरह की प्रतिक्रिया देने से पूर्व सौ बार उसके बारे में सोचना पड़ता है। वर्ना देश का माहौल खराब होने या जनता की भावनाएं भड़कने में देरी नहीं लगती है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत का एक बयान इसका सबसे ताजा उदाहरण है।

वैसे यह भी सच्चाई है कि भागवत के बयान पर पहली बार हो–हल्ला नहीं मच रहा है। इससे पूर्व भी भागवत के आरक्षण, ब्राह्मणों,डीएनए से जुड़े बयानों पर हंगामा खड़ा हो चुका है। अब संघ प्रमुख मोहन भागवत के मंदिर–मस्जिद वाले बयान पर साधु–संतों की ओर से आपत्ति सामने आई है। देश में हिंदू संतों की प्रमुख संस्था अखिल भारतीय संत समिति ने आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत की हर जगह मंदिर तलाशने और इसके सहारे कुछ लोगों का हिंदुओं का नेता बनने की कोशिश वाली टिप्पणी पर आपत्ति जताई है। समिति ने कहा है कि विभिन्न स्थलों पर मंदिर–मस्जिद विवाद को उठाने वाले नेताओं को अपने दायरे में रहना चाहिए। समिति के महासचिव स्वामी जितेंद्रानंद सरस्वती ने कहा कि मंदिर–मस्जिद का मुद्दा धार्मिक है और इसका फैसला धर्माचार्यों की ओर से किया जाना चाहिए। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि इस मुद्दे को सांस्कृतिक संगठन आरएसएस के प्रमुख मोहन भागवत को छोड़ देना चाहिए। स्वामी जितेंद्रानंद सरस्वती ने कहा कि जब धर्म का विषय उठेगा तो उसे धर्माचार्य तय करेंगे। जब यह धर्माचार्य तय करेंगे तो उसे संघ भी स्वीकार करेगा और विश्व हिंदू परिषद भी।

स्वामी जितेंद्रानंद ने कहा कि मोहन भागवत की अतीत में इसी तरह की टिप्पणियों के बावजूद 56 नए स्थानों पर मंदिर पाए गए हैं, जो मंदिर–मस्जिद मुद्दों में रुचि और कार्रवाई का संकेत देते हैं। जितेंद्रानंद महाराज ने जोर देकर कहा कि धार्मिक संगठन जनता की भावनाओं के अनुसार कार्य करते हैं। इन समूहों के कार्य उन लोगों की मान्यताओं और भावनाओं से आकार लेते हैं जिनका वे प्रतिनिधित्व करते हैं, न कि केवल राजनीतिक प्रेरणाओं से। स्वामी जितेंद्रानंद सरस्वती की यह टिप्पणी जगद्गुरु रामभद्राचार्य की ओर से मोहन भागवत से असहमति व्यक्त करने के एक दिन बाद आई है। बता दें जगद्गुरु रामभद्राचार्य ने अपने बयान में कहा था कि मैं यह स्पष्ट कर दूं कि मोहन भागवत हमारे अनुशासनकर्ता नहीं हैं, बल्कि हम हैं। साधू संत तो भागवत के बयान से नाराज हैं हीं इसके साथ–साथ यह भी पहली बार देखने को मिल रहा है कि आरएसएस प्रमुख को 'परिवार' के भीतर भी विरोध का सामना करना पड़ रहा है। इससे पहले द्वारका में द्वारका शारदा पीठम और बद्रीनाथ में ज्योतिर्मठ के शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद सरस्वती संघ परिवार के खिलाफ रुख अपनाते थे, लेकिन उन्हें कांग्रेस की विचारधारा से प्रभावित बता कर उनके बयानों को खारिज कर दिया जाता था।

बहरहाल, जगद्गुरु रामभद्राचार्य के साथ–साथ अन्य हिंदू धार्मिक गुरु आरएसएस के सुर में सुर मिलाने को तैयार नहीं हैं। उनका मानना है कि संघ को आस्था के मामलों में धार्मिक हस्तियों के नेतृत्व का सम्मान करना चाहिए। उधर,राजनीति के जानकारों का कहना है कि यह स्थिति धार्मिक मामलों में आरएसएस की भूमिका और प्रभाव को लेकर हिंदू धार्मिक समुदाय के भीतर संभावित झगड़े को भी दर्शाती है ।रामभद्राचार्य ने कहा कि संभल में जो कुछ भी हो रहा था वह वास्तव में बुरा था। उन्होंने कहा कि इस मामले में सकारात्मक पक्ष यह है कि चीजें हिंदुओं के पक्ष में सामने आ रही हैं। हम इसे अदालतों, मतपत्रों और जनता के समर्थन से सुरक्षित करेंगे। उन्होंने बांग्लादेश में हिंदुओं के खिलाफ किए गए अत्याचारों पर भी चिंता व्यक्त की।
 बता दें हाल ही में आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने मंदिर–मस्जिद विवादों के फिर से उभरने पर चिंता व्यक्त की थी। उन्होंने लोगों को ऐसे मुद्दों को न उठाने की सलाह दी। मोहन भागवत ने कहा कि मंदिर–मस्जिद विवादों को उछाल कर और सांप्रदायिक विभाजन फैलाकर कोई भी हिंदुओं का नेता नहीं बन सकता। उनका यह बयान हिंदू दक्षिणपंथी समूहों की ओर से देश भर में विभिन्न अदालतों में दशकों पुरानी मस्जिदों पर दावे जैसी मांग के बाद आया है। इस पर हिंदूवादी संगठलनों का दावा है कि ये पुरानी मस्जिदें, मंदिर स्थलों पर बनाई गई थीं। इन मस्जिदों में जौनपुर की अटाला और संभल की शाही जामा मस्जिद भी शामिल है, जिस मामले में हाल ही में हिंसा हुई थी। 24 नवंबर को भड़की हिंसा में पांच लोग मारे गए थे।

उधर, आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत के बयान पर राजनीति भी थमने का नाम नहीं ले रही है। कांग्रेस ने आरोप लगाया कि आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत का मंदिर–मस्जिद विवाद न उठाने का बयान लोगों को गुमराह करने के उद्देश्य से था। यह आरएसएस की खतरनाक कार्यप्रणाली को दर्शाता है, क्योंकि इसके नेता जो कहते हैं उसके ठीक विपरीत करते हैं। वे ऐसे मुद्दे उठाने वालों का समर्थन करते हैं। वहीं कांग्रेस नेता जयराम रमेश ने सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए आरएसएस प्रमुख को घेरा। उन्होंने कहा कि अगर आरएसएस प्रमुख ईमानदार हैं तो उन्हें सार्वजनिक रूप से घोषणा करनी चाहिए कि भविष्य में संघ ऐसे नेताओं का समर्थन कभी नहीं करेगा जो सामाजिक सद्भाव को खतरे में डालते हैं। जयराम ने कहा कि आरएसएस प्रमुख ऐसा नहीं कहेंगे, क्योंकि मंदिर–मस्जिद का मुद्दा आरएसएस के इशारे पर हो रहा है। कई मामलों में, जो लोग ऐसे विभाजनकारी मुद्दों को भड़काते हैं और दंगे करवाते हैं, उनके आरएसएस से संबंध होते हैं।

मिर्ज़ा ग़ालिबः शायरी और गज़ल के शिखर फ़नकार थे

ललित गर्ग

मिर्ज़ा असदुल्लाह बेग ख़ान, जो अपने तख़ल्लुस गालिब से जाने जाते हैं, उर्दू एवं फारसी भाषा के एक महान शायर थे। इनको उर्दू भाषा का सर्वकालिक एवं सार्वदैशिक महान शायर माना जाता है और फारसी कविता के प्रवाह को हिन्दुस्तानी जबान में लोकप्रिय बनाने वाले वे एक महान फनकार थे। हर मोहब्बत करने वाला आशिक मिर्जा गालिब के शेर, शायरी और गजल जरूर पढ़ता है। हर कोई उनकी शायरी का कायल है। मिर्जा गालिब सर्व–धर्म–सद्भाव एवं मानवीय चेतना के चितेरे थे एवं गहन संवेदनाओं के शिखर सृजनकार थे। गालिब का व्यक्तित्व बड़ा ही आकर्षक एवं बहुआयामी था। गालिब में जिस प्रकार शारीरिक सौंदर्य था, उसी प्रकार उनकी प्रकृति में विनोदप्रियता तथा वक्रता भी थी और ये सब विशेषताएं उनकी कविता एवं शायरी में यत्र–तत्र झलकती रहती हैं। चिंताओं से संघर्ष में इनकी सहायक एक तो थी शराब, जिन्दगी के अंतिम समय में जुए की लत भी लग गई। उन्हें शुरू से शतरंज और चौसर खेलने की आदत थी। अक्सर मित्र–मण्डली जमा होती और खेल–तमाशों में वक्त कटता था। अपने मदिरा प्रेम के कारण जो भाव प्रकट किए हैं, वे शेर ऐसे चुटीले तथा विनोदपूर्ण हैं कि उनका जोड़ उर्दू कविता में अन्यत्र नहीं मिलता। गालिब ने शायरी और गजल को एक नया रूप दिया। गालिब के पहले गजल को केवल प्रेम के संदर्भ में देखा जाता है लेकिन उन्होंने गजल में ही जीवन के दर्शन और रहस्यों को दर्शाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अपनी शायरी के कारण वे न सिर्फ हिन्दुस्तान बल्कि पूरी दुनिया में मशहूर हैं। आज भी उनका नाम बड़े अदब के साथ लिया जाता है।

गालिब की प्रारम्भिक शिक्षा के बारे में स्पष्टतः कुछ कहा नहीं जा सकता। उन्होंने अधिकतर फारसी और उर्दू में पारम्परिक मानवीयता, भक्ति और सौन्दर्य रस पर रचनायें लिखी। उन्होंने फारसी और उर्दू दोनो में पारंपरिक गीत काव्य की रहस्यमय–रोमांटिक शैली में सबसे व्यापक रूप से लिखा और यह गजल के रूप में जाना जाता है। उनकी शायरियों में गहन साहित्य और क्लिष्ट भाषा का समावेश था। उन्होंने अपनी शायरी का बड़ा हिस्सा असद के नाम से लिखा है। गालिब हिंदुस्तान में उर्दू अदबी के दुनिया के सबसे रोचक किरदार थे। उनकी जड़ें तुर्क से थीं। वे फारसी कविता को भारतीय भाषा में लोकप्रिय करने में माहिर थे, उन्हें पत्र लिखने का बहुत शौक था। इसीलिए उन्हें पत्र–पुरोधा भी कहा जाता था।

आज भी उनके पत्रों को उर्दू साहित्य में एक अहम विरासत माना जाता है। मिर्जा गालिब ने 11 वर्ष की छोटी उम्र में ही अपनी पहली कविता लिखी थी। मिर्जा गालिब की मातृभाषा उर्दू थी लेकिन तुर्की और फारसी भाषाओं पर भी उनकी अच्छी पकड़ थी। उन्होंने अरबी, फारसी, दर्शन और तर्कशक्ति का भी अध्ययन किया था। गालिब इश्क को जीते थे। वह इश्क का आखिरी छोर थे। उनकी नज्में

और शेर ने सालों साल इश्क की तहजीब दुनिया को दी है। अगर हम यूं कहें कि इश्क गालिब से शुरू होता है तो यह कोई आश्चर्यजनक बात नहीं होगी। उनका हर शेर एक जिंदादिल आशिक की तरह इश्क की रस्मों को निभाता है। उनका जीवन संघर्ष से भागते या पलायन करते हुए नहीं बिता और न इनकी कविता एवं शायरी में कहीं निराशा का नाम है। वह इस संघर्ष को जीवन का एक अंश तथा आवशयक अंग समझते थे। मानव की उच्चता तथा मनुष्यत्व को सब कुछ मानकर उसके भावों तथा विचारों का वर्णन करने में वह अत्यन्त निपुण थे और यह वर्णनशैली ऐसे नए ढंग की है कि इसे पढ़कर शताब्दियों बाद भी पाठक मुग्ध हो जाता है। मिर्ज़ा का जीवन अनेक विलक्षणताओं एवं विशेताओं का समवाय था। उनके विषय में पहली बात तो यह है कि वह अत्यन्त शिष्ट, शालीन एवं मित्रप्रेमी थे। जो कोई उनसे मिलने आता, उससे खुले दिल से मिलते थे। इसीलिए जो आदमी एक बार इनसे मिलता था, उसे सदा इनसे मिलने की इच्छा बनी रहती थी। मित्रों के प्रति अत्यन्त वफादार थे। उनकी खुशी में खुशी, उनके दुःख में दुःखी। मित्रों को देखकर बाग–बाग हो जाते थे। उनके मित्रों का बहुत बड़ा दायरा था। उसमें हर जाति, धर्म और प्रान्त के लोग थे। वैसे वे शिया मुसलमान थे, पर मज़हब की भावनाओं में बहुत उदार और स्वतंत्र चेता थे। गालिब सदा किराये के मकानों में रहे, अपना मकान न बनवा सके। ऐसा मकान ज्यादा पसंद करते थे, जिसमें बैठकख़ाना जरूर हो और उनके दरवाज़े भी अलग हों, जिससे यार–दोस्त बेझिझक आ–जा सकें। खाने–खिलाने के शौकीन, स्वादिष्ट व्यंजनों के प्रेमी थे। उन्हें हम स्नेह एवं मित्रता की छांह देने वाले बरगद कहे तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

हर जुबां का वो आसरा...उसके दिल में धड़कता था आगरा... उनका जन्म आगरा में 27 दिसंबर 1797 को एक सैनिक पृष्ठभूमि वाले परिवार में हुआ था। उनका पूरा बचपन ताजनगरी में ही बीता। गालिब की पृष्ठभूमि एक तुर्क परिवार से थी और इनके दादा मिर्जा कोबान बेग खान मध्य एशिया के समरकन्द से सन 1750 के आसपास अहमद शाह के शासन काल में भारत आये। उन्होंने दिल्ली, लाहौर व जयपुर में काम किया और अन्ततः आगरा में बस गये। जवानी के दहलीज पर कदम रखते ही वह दिल्ली चले आए। यहां जाने के बाद भी ताउम्र मिर्जा गालिब के दिल व दिमाग में आगरा छाया रहा। आगरा में गालिब के जन्मस्थान को 'इन्द्रभान कन्या अंतर महाविद्यालय' में बदल दिया गया है, जिस कमरे में गालिब का जन्म हुआ था उसे आज भी सुरक्षित रखा गया है। दिल्ली के चांदनी चौक के बल्लीमारान इलाके के कासिम जान गली में स्थित गालिब के घर को 'गालिब मेमोरियल' में तब्दील कर दिया गया।

बहादुर शाह जफर द्वितीय ने 1850 ई. में गालिब को 'दबीर–उल–मुल्क' और 'नज्म–उद–दौला' की उपाधि प्रदान की थी। इसके अलावा बहादुर शाह जफर द्वितीय ने गालिब को 'मिर्जा नोशा' की उपाधि प्रदान की थी, जिसके बाद गालिब के नाम के साथ 'मिर्जा' शब्द जुड़ गया। तबियत से खुद एक शायर बहादुर शाह जफर द्वितीय ने कविता सीखने के उद्देशय से 1854 में गालिब को अपना शिक्षक नियुक्त किया था। बाद में बहादुर शाह जफर ने गालिब को अपने बड़े बेटे 'शहजादा फखरूदीन मिर्जा' का भी शिक्षक नियुक्त किया था। इसके अलावा गालिब मुगल दरबार में शाही इतिहासविद के रूप में भी काम करते थे। साल 1847 में जुआ खेलने के जुर्म में गालिब को जेल भी जाना पड़ा था और उन्हें 200 रूपए जुर्माना और सश्रम कारावास की सजा दी गई थी। एक मुसलमान होने के बावजूद गालिब ने कभी रोजा नहीं रखा। मुसलमान होने के प्रश्न पर एक अंग्रेज कर्नल को जवाब देते हुए उन्होंने कहा कि मैं आधा मुसलमान हूं। ये जवाब सुनकर अंग्रेज कर्नल ने अगला सवाल दागा और पूछा कि ऐसा कैसे कि आप आधे मुसलमान हैं? इसके जवाब में मिर्जा गालिब ने कहा, हां, क्योंकि मैं शराब तो पीता हूं लेकिन सुअर नहीं खाता। मिर्जा गालिब का यह जवाब सुनकर अंग्रेज कर्नल अपनी हंसी नहीं रोक पाया। एक बार गालिब आम खा रहे थे। जमीन पर छिलके जमा कर रखे थे। वहां खड़े एक व्यक्ति ने उन छिलकों को अपने गधे को खाने के लिए दिया। गधे ने उन छिलकों को खाने से इंकार कर दिया। इस पर सज्जन व्यक्ति ने गालिब का मजाक उड़ाते हुए कहा कि 'गधे भी आम नहीं खाते हैं।' इस पर गालिब ने अपनी हाजिर जवाबी का परिचय देते हुए कहा कि 'गधे ही आम नहीं खाते हैं।'

मिर्जा गालिब का एक बहुत मशहूर शेर है 'ये इश्क नहीं आसान, बस इतना समझ लीजिये, इक आग का दरिया है और डूबकर जाना है।' न जाने गालिब ने किन परिस्थितियों में ये शेर गढ़ा होगा। लेकिन ऐसा लगता है कि इश्क पर जो पहरा उस सदी में था वह आज इक्कीसवीं सदी के ग्लोबल इंडिया में भी है। जिंदगी जीने के तमाम तरीके भले ही बदल गए हों, लेकिन प्यार मोहब्बत को देखने का हमारा पारिवारिक–सामाजिक–धार्मिक नजरिया आज भी सदियों पुराना है। मिर्जा गालिब ने बेहतरीन शेर लिखे हैं– इस सादगी पे कौन न मर जाए ऐ खुदा, लड़ते हैं और हाथ में तलवार भी नहीं। दरअसल मिर्जा गालिब अपनी हाजिर जवाबी के लिए मशहूर थे। इस दौरान भी इश्क ने 'गालिब' निकम्मा कर दिया, वर्ना हम भी आदमी थे काम के। मौत का एक दिन मुअय्यन है, नींद क्यूं रात भर नहीं आती...। गालिब की जिंदगी संघर्षों से भरी रही, उन्होंने अपनी जिंदगी में अपने कई अजीजों को खोया। अपनी जिंदगी गरीबी में गुजारी। इसके बावजूद गालिब के शेर ने लोगों के दिलों को छुआ। गालिब 15 फरवरी 1869 को इस दुनिया से अलविदा कह गए।

सहज ऋण प्रवाह ने बदली ग्रामीण जीवन शैली

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

वित्तदायी संस्थाओं तक आम आदमी की सहज पहुंच और संस्थागत व गैर संस्थागत वित्तदायी संस्थाओं द्वारा आसानी से ऋण सुविधा उपलब्ध कराने का परिणाम है कि आज देश के सुदूर गांवों में भी रहन–सहन में तेजी से बदलाव देखने को मिल रहा है। शहरों में उपलब्ध सुविधाएं अब गांवों में सहजता से उपलब्ध हो रही हैं। ऐसे में ग्रामीणों की रहन–सहन और उनकी सोच में बदलाव आया है। आज कोई भी व्यक्ति साधन–सुविधाओं की ओर देखता है और उन सुविधाओं को पाने के लिए कर्ज भी लेना पड़े तो व्यक्ति दो बार सोचता नहीं। यही समय और सोच का बदलाव है। सांख्यिकी मंत्रालय की हालिया रिपोर्ट इस बात की गहराई से पुष्टि करती है। भारत सरकार के सांख्यिकी मंत्रालय की व्यापक वार्षिक माड्यूलर रिपोर्ट के अनुसार शहरों की तुलना में अब गांवों में ऋण लेने वाले अधिक होते जा रहे हैं। रिपोर्ट के अनुसार गांवों में प्रति एक लाख पर 18714 लोगों ने किसी ना किसी तरह का कर्ज लिया है, वहीं शहरी क्षेत्र का यह आंकड़ा ग्रामीण क्षेत्र की तुलना में कुछ कम 17442 है। अच्छी बात यह है कि अब संस्थागत ऋणों की उपलब्धता सहज हो गई है पर गैर संस्थागत ऋण प्रदाताओं ने भी तेजी से पांव पसारे हैं। हालांकि चिंता की बात यह है कि इन गैर संस्थागत ऋण प्रदाताओं में कहीं ना कहीं पुराने साहूकारों की झलक दिखाई देती है। दूसरी चिंता का कारण संस्थागत ऋण में भी इस तरह के ऋणों की ब्याज दर कहीं अधिक है और संस्थागत हो या गैर संस्थागत ऋण, प्रदाता ऋण की एक किशत भी समय पर जमा नहीं होती है तो दण्डनीय ब्याज, वसूली के नाम पर संपर्क और पत्राचार आदि का खर्चा और इसी तरह के अन्य छुपे चार्जेज ऋण लेने वाले की कमर तोड़ने के लिए काफी हैं।

इसमें दो राय नहीं कि शहरी नागरिकों की तरह ग्रामीण नागरिकों के जीवन स्तर और रहन–सहन में सुधार होना चाहिए। शहरों से किसी भी क्षेत्र में ग्रामीण पीछे नहीं रहने चाहिए। सबसे अच्छी बात यह है कि ग्रामीणों और शहरियों में जीवन स्तर को लेकर जो स्तरीय भेद सामने आता है वह दिन प्रतिदिन कम रहा है। आज फ्रीज, एयर कण्डीशनर, महंगे एन्ड्रायड मोबाइल या लक्जरी वाहन आसानी से गांवों में देखने को मिल जाते हैं। देखा जाए तो आज पहले वाले गांव नहीं रहे। यह विकास की तस्वीर है। यहां तक कि गांवों में निजी स्कूलों की पहुंच भी हो गई है। आज ग्रामीण भी शहरी नागरिकों की तरह अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा, अच्छी स्वास्थ्य सेवाएं और अच्छे खानपान पर ध्यान देने लगे हैं।

सहज ऋण उपलब्धता के साइड इफेक्ट भी हैं जिन पर ध्यान दिया जाना आवशयक है। सबसे पहला तो यह कि कुछ इस तरह के ऋण होते हैं जिन्हें होड़ में ले लिया जाता है और उसका सीधा असर कर्ज के मकड़जाल में फंसने की तरह हो जाता है। सांख्यिकी मंत्रालय के आंकड़े यह भी बताते हैं कि ग्रामीण क्षेत्र में ऋण लेने में महिलाएं भी पीछे नहीं हैं और ऋण लेने वाली महिलाओं की संख्या भी बढ़ती जा रही है। दरअसल, ग्रामीण क्षेत्र हो या शहरी क्षेत्र अधिकतर ऋण घरेलू जरूरतों को पूरा करने, बच्चों की पढ़ाई–लिखाई, खानपान और शानोशौकत से रहने के लिए पहनावे आदि के लिए लिया जाता है। गांव और शहरों में एक अंतर यह है कि शहरों में स्वास्थ्य सेवाएं सरकारी स्तर पर आसानी से उपलब्ध है, वहीं गांवों में स्वास्थ्य और शिक्षा पर अधिक खर्च करना पड़ता है। यही कारण है कि शिक्षा और स्वास्थ्य जरूरतों को पूरा करने के लिए भी ग्रामीणों को ऋण लेना पड़ता है। यह सब कृषि कार्यों के लिए लिए जाने वाले ऋण से अलग हट कर है। वैसे भी अधिकांश स्थानों पर संस्थागत कृषि ऋण लगभग जीरो ब्याजदर पर या नाममात्र के ब्याज पर उपलब्ध होता है पर नकारात्मक पृक्ष यह है कि बिना ब्याज के ऋण को समय पर नहीं चुका कर कर्ज माफी के राजनीतिक जुमले के चलते जीरो ब्याज सुविधा से भी वंचित हो जाते हैं। खैर यह विषय से भटकाव होगा। शहरों की तरह गांव भी आधुनिकतम सुख–सुविधाओं से संपन्न हो इसमें कोई दो राय नहीं हो सकती। विकास की गंगा भी सभी तरफ समान रूप से बहनी चाहिए, इससे भी इनकार नहीं किया जा सकता बल्कि यह सबका सपना है। ग्रामीण क्षेत्र में भी बढ़ते कर्ज के पीछे जो चिंतनीय बात है वह यह है कि कहीं ग्रामीण कर्ज के मकड़जाल में फंस कर कुछ पाने की जगह खो अधिक देंगे, इसकी आशंका अधिक है। इसका बड़ा कारण यह है कि संस्थागत ऋण यानी बैंकों द्वारा दिए जाने वाले ऋण हों या फिर गैर संस्थागत ऋण, परेशानी इनकी वसूली व्यवस्था को लेकर होती है। जितने ऋण देते समय सहृदय होते हैं, ऋण की किशत की वसूली के समय उतने ही बेदर्द होने में कोई कमी नहीं रहती। शहरों में आए दिन रिकवरी एजेंटों के व्यवहार से दो–चार होते देखने में आ जाते हैं। गांवों में तो वसूली करने वालों के टार्चर के हालात बदतर ही होंगे। ऐसे में समय रहते इस विषय में सोचना होगा। सरकार और इस क्षेत्र में कार्य कर रहे गैर सरकारी संगठनों के सामने बड़ी जिम्मेदारी अवेयरनेस प्रोग्राम चलाने की है।

दरअसल, जब ऋण प्रदाता संस्था से ऋण लिया जाता है तो उस समय जो डाक्यूमेंट होता है वह इतना बड़ा और जटिल होता है कि उसे पूरा देखा ही नहीं जाता है और ऋण दिलाने वाला व्यक्ति निर्धारित स्थानों पर हस्ताक्षर करने पर जोर देता है। पढ़ा–लिखा और समझदार व्यक्ति भी पूरे डाक्यूमेंट से गो थ्रू नहीं होता और परिणाम यह होता है कि बाद में दस्तावेज के प्रावधानों के कारण दो–चार होना पड़ता है। हस्ताक्षर करने से हाथ बंध जाते हैं। सवाल यह कि अभियान चलाकर यह बताया जाना जरूरी है कि ऋण की एक भी किशत चूक गए तो कितना नुकसान भुगतना पड़ जाएगा और यदि दुर्भाग्यवश दो–तीन किशत नहीं चुका पाये तो हालात बदतर हो जाएंगे और जिस तरह से किसी जमाने में साहूकार के चंगुल में फंस जाते थे वो ही हालात होने में देर नहीं लगती।

दूसरा यह कि ऋण लेते समय प्राथमिकता भी साफ होनी चाहिए। केवल देखा–देखी ऋण लेने की होड़ भी नुकसानदायक है। गांवों में खेती की जमीन बेच कर अनावशयक व दिखावे में राशि खर्च करने के दुष्परिणाम सामने हैं। ऐसे में बैंकों और एनजीओ को सामाजिक दायित्व समझते हुए अवेयरनेस प्रोग्राम चला कर लोगों को जागृत करना होगा, नहीं तो कर्ज का यह मर्ज गंभीर रूप लेने में देरी नहीं लगायेगा। जीवन स्तर सुधारने वाली यह सहज वित्त सुविधा साहूकार के कर्ज जाल में फंसने की तरह होकर बहुत कुछ खोने का कारण बन सकती है।

(लेखक, स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं।)

बोरवेल से होने वाली दुर्घटनाओं की करें रोकथाम, राज्यभर में नहीं हो कोई भी खुला बोरवेल

मुख्यमंत्री भजनलाल ने ली सड़क सुरक्षा महत्वपूर्ण समीक्षा बैठक

सड़क दुर्घटना में जिम्मेदारी तय कर करें सख्त कार्यवाही : मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा

चमकता राजस्थान

जयपुर, 26 दिसंबर। मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि सड़क सुरक्षा एक सामूहिक जिम्मेदारी है, जिसमें सरकार, प्रशासन और जनता सभी का योगदान आवश्यक है। मुख्यमंत्री ने सभी विभागों को निर्देश दिए कि वे सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने के लिए मिशन मोड पर काम करें। उन्होंने कहा कि दुर्घटना संभावित स्थानों को चिन्हित कर इनका शीघ्र सुधार किया जाए तथा प्रदेशभर में चिन्हित ब्लैक स्पॉट्स को प्राथमिकता के आधार पर ठीक किया जाए। शर्मा गुरुवार को मुख्यमंत्री निवास पर आयोजित सड़क सुरक्षा की समीक्षा बैठक को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि जनवरी से सड़क सुरक्षा के प्रति लोगों में जागरूकता बढ़ाने के लिए विशेष अभियान चलाए जाएं तथा इसके अन्तर्गत स्कूलों, कॉलेजों और कार्यस्थलों पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाएं। साथ ही, जनसाधारण को ट्रैफिक नियमों का पालन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाए। मुख्यमंत्री ने कहा कि सड़क सुरक्षा एक महत्वपूर्ण विषय है जिसमें विभिन्न विभागों की अहम भूमिका है। उन्होंने कहा कि परिवहन एवं सड़क सुरक्षा, पुलिस, सार्वजनिक निर्माण, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य तथा शिक्षा सहित विभिन्न विभाग आपसी समन्वय स्थापित कर सड़क दुर्घटनाओं को न्यूनतम करने का प्रयास करें।

सड़क सुरक्षा के लिए 6ए आधारित रणनीति बनाकर करें कार्यवाही

जनवरी से सड़क सुरक्षा अभियान होगा शुरू

सड़क सुरक्षा के लिए जिला स्तरीय समिति की सघन मॉनिटरिंग हो

शर्मा ने कहा कि सड़क सुरक्षा के लिए जिला स्तर पर बनी समिति की राज्य स्तर पर नियमित मॉनिटरिंग हो। संबंधित जिला कलक्टर एवं पुलिस अधीक्षक दुर्घटना संभावित क्षेत्रों में जाकर वहां दुर्घटनाओं के रोकथाम के लिए आवश्यक कार्यवाही करें। उन्होंने कहा कि प्रत्येक गांव में सड़क सुरक्षा के लिए जीवन रक्षा मित्र बनाएं, सड़क सुरक्षा अभियान के तहत गांवों में जागरूकता अभियान में इनका सहयोग लें। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि बोरवेल से होने वाली घटनाओं की रोकथाम के लिए जिम्मेदारों के खिलाफ कार्यवाही की जाए। साथ ही, आगामी दो सप्ताह में सभी जिला कलक्टर यह सुनिश्चित करें कि बोरवेल खुले नहीं हों। जिससे किसी भी तरह की जनहानि को रोका जा सके।

शासन सचिव परिवहन शुचि त्यागी ने प्रस्तुतीकरण के माध्यम से राज्य में सड़क दुर्घटनाओं की स्थिति, दुर्घटना संभावित क्षेत्रों में दुर्घटनाओं को रोकने के लिए विभाग द्वारा किए जा रहे कार्य, अवैध कट्स की स्थिति, सड़क सुरक्षा के मानकों की सुनिश्चितता सहित विभिन्न विशयों के बारे में विस्तृत रूप से जानकारी दी।इस दौरान उप मुख्यमंत्री डॉ. प्रेमचंद बैरवा, मुख्य सचिव सुधांश पंत, पुलिस महानिदेशक यू आर साहू, अतिरिक्त मुख्य सचिव जल संसाधन अभय कुमार, अतिरिक्त मुख्य सचिव वित्त अखिल अरोडा, अतिरिक्त मुख्य सचिव मुख्यमंत्री कार्यालय शिखर अग्रवाल, प्रमुख शासन सचिव सार्वजनिक निर्माण प्रवीण गुप्ता, प्रमुख शासन सचिव जन स्वास्थ्य अभियान्त्रिकी भास्कर ए. सावंत, प्रमुख सचिव मुख्यमंत्री कार्यालय आलोक गुप्ता, जयपुर कलक्टर जितेंद्र कुमार सोनी, मिशन निदेशक एनएचएम डॉ. भारती दीक्षित, जयपुर पुलिस आयुक्त बीजू जॉर्ज जोसफ सहित संबंधित विभागों एवं एनएचएआई के अधिकारीगण उपस्थित रहे।

सड़कों पर नहीं हो किसी भी वाहन की अवैध रूप से पार्किंग

शर्मा ने कहा कि ब्लैक स्पॉट को तुरंत सुधारने के लिए विशेश योजना बनाएं। इन कार्यों में गुणवत्ता का पूरा ध्यान रखा जाए। उन्होंने कहा कि सड़क दुर्घटना में जिम्मेदारी तय कर संबंधित विभाग सख्त कार्रवाई करे। साथ ही, किसी भी स्थान पर सड़क निर्माण समयबद्ध नहीं हो रहा है तो कॉन्ट्रैक्टर के साथ विभाग की भी जिम्मेदारी सुनिश्चित हो। उन्होंने कहा कि परिवहन विभाग एवं पुलिस विभाग हाइवे पर पार्किंग की व्यवस्था सुनिश्चित करें तथा सड़क पर किसी भी वाहन की अवैध रूप से पार्किंग नहीं हो।

सड़क सुरक्षा में कार्य करने वाले व्यक्ति एवं संस्थाओं को करें सम्मानित

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा सड़क सुरक्षा को लेकर समुचित प्रयास किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि संभाग स्तरीय सड़क सुरक्षा टास्क फोर्स का गठन तथा इमरजेंसी रिस्पॉन्स सपोर्ट सिस्टम के अन्तर्गत समस्त आपातकालीन सेवाओं का एकीकरण भी किया गया है। उन्होंने निर्देश दिए कि सड़क सुरक्षा में कार्य करने वाले व्यक्ति एवं संस्थाओं को विशेश आयोजनों पर सम्मानित किया जाए जिससे दुर्घटना में मदद करने वाले लोग प्रोत्साहित हो।

सड़क सुरक्षा के लिए 6ए फॉर्मूला

मुख्यमंत्री ने कहा कि सड़क दुर्घटनाओं पर नियंत्रण एवं प्रभावितों की बेहतर देखरेख हेतु राज्य में 6ए (एजुकेशन, इंजीनियरिंग, एनफोर्समेंट, इमरजेंसी केयर, इवेल्यूएशन, एन्गेजमेंट) आधारित रणनीति के तहत कार्यवाही प्रारंभ की जाए। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि पहले ई (एजुकेशन) के तहत सड़क सुरक्षा के नियमों के बारे में लोगों को शिक्षित किया जाए। दूसरे ई (इजीनियरिंग) के तहत सड़कें, ब्रिज अन्य बुनियादी ढ़ांचे को सुरक्षित और प्रभावी बनाने के लिए बेहतर डिजाइन किया जाए। उन्होंने कहा कि तीसरे ई (एनफोर्समेंट) के तहत यातायात कानूनों की सख्ती से पालना सुनिश्चित किया जाए और नियमों का उल्लंघन करने वालों पर जुर्माना एवं अन्य दंडात्मक कार्रवाई की जाए। चौथे ई (इमरजेंसी) के तहत दुर्घटना पीड़ितों को त्वरित एवं प्रभावी चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करवाई जाए। उन्होंने कहा पांचवे ई (इवेल्यूएशन) के तहत सड़क सुरक्षा उपायों का नियमित रूप से मूल्यांकन कर सुरक्षा उपायों में सुधार किया जाए तथा छठवें ई (एन्गेजमेंट) के तहत समुदाय एवं विभिन्न हितधारकों को सड़क सुरक्षा अभियानों में शामिल किया जाए।

यातायात नियमों का उल्लंघन करने वालों के विरूद्ध करें सख्ती से कार्रवाई

शर्मा ने कहा कि यातायात नियमों की सख्ती से पालना सुनिश्चित की जाए तथा नियमों का उल्लंघन करने वालों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाए। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि दुर्घटना संभावित क्षेत्रों में बैरिकेडिंग, साइन बोर्ड, स्पीड ब्रेकर सहित तमाम प्रबंध सुनिश्चित किया जाए जिससे दुर्घटनाओं की रोकथाम की जा सके। उन्होंने कहा कि सड़क दुर्घटनाओं के रोकथाम के लिए आधुनिक तकनीक का उपयोग करते हुए सीसीटीवी कैमरे स्थापित किए जायें

सड़कों की सुरक्षा व्यवस्था का मूल्यांकन समय-समय पर करें

मुख्यमंत्री ने सभी अवैध कट्स को बंद करने, सड़कों को अतिक्रमण मुक्त करने, मानकों के अनुरूप रोड फर्नीचर की सुनिश्चितता एवं उनका रख-रखाव करने, सड़कों पर आवारा जानवरों की रोकथाम करने, वाहनों की फिटनेस नियमानुसार सुनिश्चित करने, ओवरलोडिंग, ओवरहैंगिंग, ओवरक्राउडिंग आदि के विरूद्ध कड़ी कार्रवाई करने के भी निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि सुरक्षा व्यवस्था का मूल्यांकन समय-समय पर करें तथा सड़क दुर्घटनाओं का सही कारण जानकर उसका विश्लेशण भी करें ताकि ऐसी घटनाएं दोबारा नहीं हों।

संक्षिप्त समाचार

पूर्व प्रधानमंत्री डॉ सिंह के निधन पर श्री देवनानी ने संवेदना व्यक्त की

चमकता राजस्थान। जयपुर!(खलील कुरैशी) 26 दिसंबर। राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने पूर्व प्रधानमंत्री और राजस्थान से राज्यसभा के पूर्व सांसद डॉ मनमोहन सिंह के निधन पर दुःख व्यक्त किया है। देवनानी ने दिवंगत आत्मा की शांति और शोक संतप्त परिजनों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना की है।

वीर बाल दिवस के उपलक्ष्य पर बाल संबल विद्यालय में बांटी पाठ्यसामग्री और फल

चमकता राजस्थान। मनोहरपुर (खलील कुरैशी)। बाल संबल सिरोही में वीर बाल दिवस मनोहरपुर मंडल संयोजक महिपाल सिंह गुर्जर के नेतृत्व में हर्षोल्लास से मनाया गया। महिपाल सिंह गुर्जर और मनीष कुमार आत्रेय ने बताया की प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वीर बाल दिवस को राष्ट्रीय दिवस घोषित किया है, उसके उपलक्ष्य में भारतीय जनता पार्टी सम्पूर्ण राष्ट्र में इस दिवस को वीर बाल दिवस के रूप में मना रही है। इस अवसर पर बाल संबल में नन्हे मुन्ने बालको को पठाय सामग्री और फल वितरित किए गए। इस मौके पर श्योजी राम बिलपुरी, कृष्ण कुमार वर्मा, अजय रैगर, सुरेंद्र यादव सहित कई लोग मौजूद रहे।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के निधन पर व्यक्त की शोक संवेदना

चमकता राजस्थान। जयपुर!(खलील कुरैशी) 26 दिसम्बर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि डॉ. सिंह का निधन देश के लिए अपूरणीय क्षति है। शर्मा ने ईश्वर से दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करने तथा उनके परिजनों को यह दुख सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की है।

निर्धारित मापदंडों के अनुरूप ही मोबाइल टावर्स की स्थापना एवं संचालन

चमकता राजस्थान

- **जिला कलक्टर की अध्यक्षता में आयोजित हुई जिला स्तरीय दूरसंचार समिति की बैठक**
- **मोबाइल सेवा प्रदाता कंपनियों को 15 दिनों में संरचनात्मक सुदृढ़ता की जांच के निर्देश**

जयपुर! (खलील कुरैशी) 26 दिसंबर। जिला कलक्ट्रेट सभागार में गुरुवार को जिला स्तरीय दूरसंचार समिति की बैठक का आयोजन हुआ। जिला कलक्टर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी की अध्यक्षता में आयोजित हुई बैठक में सभी टेलीकॉम कंपनियों के प्रतिनिधियों को निर्धारित मापदंडों के अनुसार मोबाइल टावर्स की स्थापना एवं संचालन करने के निर्देश दिये गए। साथ ही, मोबाइल सेवा प्रदाता कंपनियों को 15 दिनों में संरचनात्मक सुदृढ़ता की जांच करने के लिए भी निर्देशित किया गया है।बैठक में जिला कलक्टर ने अधिकारियों को बिल्डिंग पर लगे मोबाइल टावर की जांच करने एवं संरचनात्मक सुरक्षा सुनिश्चित करने के साथ-साथ सड़क किनारे एवं डिवाइडर पर लगे मोबाइल टावर की जांच करने के लिए निर्देशित किया। उन्होंने बैठक में आमजन की सुरक्षा के साथ किसी भी प्रकार की लापरवाही को बर्दाश्त नहीं करने की बात कही। साथ ही, मोबाइल सेवा प्रदाता कंपनियों के अधिकारियों को पुराने एवं जर्जर भवनों स्थापित मोबाइल टावर्स का तुरंत प्रभाव से निरीक्षण कर रिपोर्ट प्रस्तुत करने हेतु निर्देशित किया।बैठक में टेलीकॉम कंपनियों के प्रतिनिधियों को मोबाइल टावर्स का नियमित निरीक्षण करने, समय-समय पर आवश्यकतानुसार मरम्मत करवाने, नए मोबाइल टावर्स की स्थापना के समय गुणवत्तापूर्ण निमार्ण सुनिश्चित करने के भी निर्देश दिये गए।बैठक में अतिरिक्त जिला कलक्टर मुकेश कुमार मूंड सहित अन्य संबंधित विभागों के अधिकारी एवं मोबाइल सेवा प्रदाता कंपनियों के प्रतिनिधियों ने शिरकत की।

एबीवीपी के 60 वें अधिवेशन को लेकर वैर में पोस्टर विमोचन कार्यक्रम आयोजित

चमकता राजस्थान। वैर (राजवीर सिंह)। एबीवीपी के 60 वे प्रांत अधिवेशन की तैयारी को लेकर पोस्टर विमोचन कार्यक्रम छात्र नेता नरेश खरबेरा के नेतृत्व में किया गया। विशिष्ट अतिथि पूर्व जिला सह प्रमुख विश्वेंद्र सिंह भूतौली रहे,विश्वेंद्र सिंह ने बताया कि 15 वर्ष के बाद भरतपुर जिले में अधिवेशन हो रहा है जिसमें प्रांत के लगभग 2500 कार्यकर्ता भाग लेंगे,अधिवेशन ऑडिटोरियम भरतपुर में आयोजित होगा,इस दौरान रविन्द्र सिंह, कैलाश,अमन,सुनील,राज,जितेंद्र चौहान,कृष्णा,अंशु,सोनू,र वि सिंह उपस्थित रहे।

उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने लाइव प्रसारण से कार्यक्रम में की सहभागिता

प्रधानमंत्री द्वारा तीसरे वीर बाल दिवस पर 'सुपोषित ग्राम पंचायत' अभियान का शुभारंभ

चमकता राजस्थान

जयपुर, 26 दिसम्बर। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा गुरुवार को तीसरे वीर बाल दिवस उत्सव के अवसर पर ₹सुपोषित ग्राम पंचायत₹ अभियान का शुभारंभ किया गया। उन्होंने प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पु-रस्कार विजेताओं से संवाद कर उन्हें प्रोत्साहित और प्रेरित किया। उन्होंने बच्चों को साहस, नेतृत्व और दृढ़ता के महत्व पर प्रेरणादायक संदेश भी दिया।उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी इस अवसर पर जयपुर में ओटीएस स्थित भगवत सिंह मेहता सभागार में कार्यक्रम के दूरदर्शन पर लाइव प्रसारण में उपस्थित रहकर सहभागिता की। उन्होंने इस अवसर पर कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा वीर बाल दिवस के अवसर पर ₹सुपोषित ग्राम पंचायत₹ अभियान का शुभारंभ किया गया यह प्रसन्नता की बात है। 17 वीर बालक बालिकाओं को प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से सम्मानित किया। 17 विजेता बच्चों में से 7 लड़के और 10 लड़कियां हैं, जो कि बालक–बालिकाओं के लिए प्रेरणादायी है।दिया कुमारी ने कहा कि आज का दिन गौरव का दिन है, आज के दिन देश के गौरव और मान सम्मान के लिए साहबजादों ने अपने प्राणों का

बलिदान दिया यह हम सब के लिए प्रेरणादायी है। आज की युवा पीढ़ी को देशहित में दिये गए इस बलिदान से बहुत कुछ सीखने का अवसर है।उपमुख्यमंत्री ने बताया कि इस अवसर पर पूरे प्रदेश से जिला और ब्लॉक स्तर के सभी अधिकारी, डीपीओ, सीडीपीओ, पर्यवेक्षक, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, सहायिकाएं और ओएससी, एचईडब्ल्यू, शक्ति सदन, सखी निवास, सीसीआई, सीडब्ल्यूसी, जेजेबी आदि के अधिकारी व कर्मचारी अपने मोबाइल फोन, कार्यालय डेस्कटॉप, लैपटॉप या टैबलेट के माध्यम से इस कार्यक्रम में शामिल हुए हैं।नई दिल्ली में राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू द्वारा प्रधानमंत्री राष्ट्रीय बाल पुरस्कार से 17 बच्चों को असाधारण प्रतिभा के लिए सम्मानित किया गया। प्रधानमंत्री ने इन 17 वीर बालक बालिकाओं से संवाद किया। उनके सम्मान पत्र पर ऑटोग्राफ भी दिया। इस अवसर पर केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री अन्नपूर्णा देवी, राज्यमंत्री सावित्री ठाकुर भी उपस्थित रहीं।

- **सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली 1000 सुपोषित ग्राम पंचायतों में से प्रत्येक को एक लाख का पुरस्कार**

इस अवसर पर महिला एवं बाल विकास शासन सचिव महेन्द्र सोनी ने बताया कि महिला एवं बाल विकास मंत्रालय भारत सरकार का प्रमुख मिशन सक्षम आंगनबाड़ी और पोषण 2.0 भारत में कुपोषण की चुनौती से निपटने में जन भागीदारी की महत्वपूर्ण भूमिका पर केंद्रित है। इस मिशन के तहत सुपोषित ग्राम पंचायत अभियान शुरू किया गया है। जिसका उद्देश्य कई हितधारकों और जमीनी स्तर पर सक्रिय सामुदायिक भागीदारी के साथ लक्षित आबादी के पोषण संबंधी परिणामों और कल्याण में सुधार करना है। इसके साथ ही पंजीकृत लाभार्थियों के लिए भौतिक बुनियादी ढांचे, सेवा वितरण स्थिति और पोषण संबंधी परिणामों का एक बेंचमार्क स्तर हासिल करने के लिए ग्राम पंचायतों में आंगनबाड़ियों को प्रोत्साहित करना है। देश में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली 1000 सुपोषित ग्राम पंचायतों में से प्रत्येक को एक लाख का पुरस्कार दिया जाएगा। इसके अलावा, सर्वाधिक सुपोषित ग्राम पंचायतों वाले शीर्ष 3 जिलों को भी मान्यता दी जाएगी

दुल्हा-दुल्हन ने निकाह में शरई को अमलीजामा पहनाकर समाज की बेहतरी और मजबूती का दिया खूसुशी पैगाम

कुरैशी समाज चल पड़ा सुधार की डगर पर,शादीयों के नाम पर अनावश्यक खर्चों पर लगाया विराम

निकाह में गैर जरूरी रस्मों का बहिष्कार कर शरई तरीक़े को अपनाकर समाज के विकास को दी मजबूती

चमकता राजस्थान

जयपुर।!(खलील कुरैशी) एम. डी रोड़ जयपुर निवासी मरहूम हाजी खलील कुरैशी की दुआएं और नेक कोशिशें, पहल आखिरकार कामयाब हुई। इनकी इच्छा थी कि वे कौम व समाज में ऐसी मिसाल पेश करें जिससे कि लोगों को फिजूलखर्ची और गैर जरुरी रस्मों-रिवाज पर पाबंदी लगे। इनके ये प्रयास बरोज जुम्मेरात को यहां रंग लाए। इन्होंने अपनी बेटी मरीयम बानों की शादी इस्लामी तरीके से करते हुए शर्बत व खिजूर पर निकाह कराया। वहीं इनकी नेक कोशिशों में पूरा साथ दिया एम डी रोड़ जीवा चौधरी की गली निवासी सईद कुरैशी के बेटे दानिश कुरैशी ने आपको बता दें कि मरहूम हाजी खलील कुरैशी की बेटी दीनी तर्बियतयाफ्ता मरीयम की भी ख्वाहिश थी कि उसका रिश्ता दीनदार घराने में हो। शरीयत पर अमल करते हुए आज दोनों ही खानदानों ने अपने बच्चे व बच्ची का निकाह सादगी के साथ मस्जिद में कराया। आने वाले मेहमानों को शर्बत व खिजूर पेश कर मेहमान नवाजी की गई।गत दिनों मरहूम हाजी खलील कुरैशी की बेटी का रिश्ता मोहम्मद सईद कुरैशी के बेटे के साथ मात्र एक रुपए सलाम-मुद्दे के देकर सादगी के साथ रस्म अदायगी की थी। तयशुदा उसी रिश्ते को आगे बढ़ाते हुए शरई तरीके से निकाह हुआ। निकाह की रस्म मस्जिद कुरैशियान एम.डी.रोड़ आदर्श नगर जयपुर में अदा कराने के बाद लड़की वालों ने दुल्हा पक्ष व बारातियों को खिजूर व शर्बत पिलाकर सादगी के साथ मरहूम हाजी खलील कुरैशी बबई वालों के परिवारजनों ने अपनी लख्ते जिगर को बेहद सादगी के साथ रुखसत किया।

मरहूम हाजी खलील कुरैशी की लख्ते जिगर मरीयम बानों और सईद कुरैशी के लाडले दानिश कुरैशी का मस्जिद कुरैशियान में हुआ निकाह

निकाह को आसान और सहज कर समाज को मजबूती प्रदान की जा सकती हैं :

» मरहूम खलील कुरैशी बबई वाले के भतीजे जुल्फीकार कुरैशी ने इस दौरान अपनी प्रतिक्रिया में कहा कि दहेज लेने और देने की प्रथा इस्लाम का हिस्सा नहीं है। निकाह को आसान बनाएं, अनावश्यक खर्चों से बचें। तालीम, रोजगार व अन्य आवश्यक कार्य के लिए खर्च करें। निकाह एक तरह से दो परिवार को जोड़ने का जरिया है। इसमें दिखावे की कोई जगह नहीं होनी चाहिए। जिससे समाज का चहुंमुखी विकास और मजबूती प्रदान हो

समाज के मौज्जीन लोगों वरिष्ठ समाजसेवी, युवाओं ने निकाह में शिरकत कर दी दुआएं

» मस्जिद कुरैशीयान में आयोजित हुआ यह शरई निकाह असर की नमाज़ के बाद पुरें अदब ओ अमान के पुरखुलुस तरीके से अंजाम दिया गया इस दौरान कुरैशी बिरादरी के बुजुर्गों मौज्जीन लोगों, समाजसेवियों, युवाओं ने बड़ी संख्या में इस पाक और मुबारक मौके में शामिल होकर अपनी दुआओं से नवाजा

मस्जिद में शरई तरीक़े से निकाह को सादगीपूर्ण सर अंजाम देकर, दिया सकारात्मक संदेशः सलाउद्दीन कुरैशी

मस्जिद में शरई तरीक़े अपनाकर निकाह को सादगी से करने का दिया संदेश :सलाउद्दीन कुरैशी

गौरतलब है कि समाजसेवी सलाउद्दीन कुरैशी जो कि रिश्ते में लड़की के मामा हैं उन्होंने इस पाक और मुबारक मौके पर कहा कि हमें मैंने अपने बच्चे का निकाह इस्लामी तरीके से करना चाहिए।इसी के तहत यह निकाह शरीयत के मुताबिक करके समाज को सकारात्मक पैगाम दिया है कि निकाह को आसान करें और इस मामले में इस्लामी उसूलों की पाबंदी से पालना करें। उन्होंने लोगों से शादी में होने वाली फिजूलखर्ची को छोड़ने, मस्जिदों में सादगी से निकाह करने और दहेज लेन-देन को पूरी तरह छोड़ने की अपील की है।बता दें कि समाजसेवी मरहूम खलील कुरैशी बबई वाले की बेटी मरीयम और मोहम्मद सईद कुरैशी के बेटे मोहम्मद दानिश कुरैशी ने दहेज वगैरा लेने-देने से इनकार कर दिया और आवाम को एक प्यारा सा पैगाम दिया कि निकाह को जमीनी स्तर पर आसान करें,जिससे गरीब मां-बाप अपनी बेटी का निकाह आसानी से कर सके। निकाह में फिजूलखर्ची करके अपनी जिंदगियों को तबाह-बर्बाद ना करें। कहा कि दहेज एक बड़ी समस्या है। मौजूदा वक्त में बच्चों की शादियां-निकाह मां बाप के लिए बहुत बड़ी जिम्मेदारी एवं चुनौती बनती जा रही है। कई बेटियों की तो शादियों में इसी कारण देरी होती जा रही कि दहेज व बारातियों पर खर्च सहन नहीं हो पाता। कई जगह दहेज के कारण रिश्ता टूट जाता है, इसलिए दहेज जैसी प्रथाओं पर अंकुश लगाने की आवश्यकता है। शादियों में अनावश्यक खर्च करने से बेहतर है कि उसे बच्चों की शिक्षा पर खर्च करें। इस मुबारक मौके पर इमाम साहब ने लोगों से निकाह को मस्जिदों में शरई तरीके से करने व शादी में होने वाली फिजूलखर्ची को छोड़ने,और दहेज लेन-देन को पूरी तरह छोड़ने का आजिजाना ऐलान कर इसकी बरकतें और फजीलतें भी बयान करी।

संक्षिप्त समाचार

राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने वीर बालकों के शौर्य और बलिदान को याद करते उन्हें नमन किया

● राज्यपाल बागडे ने गुरुद्वारा पहुंचकर मत्था टेका

चमकता राजस्थान। जयपुर!(खलील कुरैशी) 26 दिसम्बर। राज्यपाल हरिभाऊ बागडे गुरुवार सायं राजा पार्क स्थित गुरुद्वारा पहुंचे। उन्होंने वहां मत्था टेका और गुरु वाणी का श्रवण किया। बागडे ने 'वीर बालक दिवस' पर दसवें गुरु गोविंद सिंह के चार साहिबजादों के बलिदान को भी याद किया और कहा कि भारतीय संस्कृति में यह वीरता और शौर्य की अनूठी मिसाल है। उन्होंने कहा कि यह दिवस उनके शौर्य और त्याग के स्मरण का है।राज्यपाल ने भारत की शौर्य परंपरा के पर्याय गुरु गोविंद सिंह एवं उनके चारों साहिबजादों को नमन करते हुए गुरुद्वारा साहिब में उन्हें श्रद्धा निवेदित की।

पर्यावरण एवं वन मंत्री संजय शर्मा ने अधिकारियों से लिया पैंथर को रेस्क्यू करने के कार्य का फीडबैक

● 24 घण्टे मॉनिटरिंग रखकर यथाशीघ्र पैंथर को रेस्क्यू करें: - पर्यावरण एवं वन राज्यमंत्री

चमकता राजस्थान। जयपुर!(खलील कुरैशी) 26 दिसम्बर। पर्यावरण एवं वन राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) संजय शर्मा ने गुरूवार को अलवर जिले के राजऋषि महाविद्यालय परिसर पहुंचकर पैंथर के रेस्क्यू के संबंध में वन विभाग के अधिकारियों से जानकारी ली। शर्मा ने वन विभाग के अधिकारियों से पैंथर को रेस्क्यू करने हेतु की जा रही कार्यवाही का फीडबैक लेकर अधिकारियों से कहा कि महाविद्यालय परिसर के आसपास पैंथर के स्वतंत्र विचरण करने से किसी भी प्रकार की दुर्घटना हो सकती है इसलिए वन विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी मुश्तैद रहकर 24 घण्टे नियमित मॉनिटरिंग रखते हुए यथाशीघ्र पैंथर को रेस्क्यू करें। डीएफओ अलवर राजेन्द्र सिंह हुड्डा ने बताया कि वन विभाग द्वारा पैंथर की नियमित मॉनिटरिंग की जा रही है तथा पैंथर को रेस्क्यू करने के लिए विभाग द्वारा तीन पिंजरे लगाए गए हैं। विभाग इस कार्य के लिए पूरी तरह से सजग व मुश्तैद है शीघ्र ही पैंथर को रेस्क्यू कर लिया जाएगा। उन्होंने बताया कि आमजन भयग्रस्त नहीं हो, वन विभाग की टीम पूर्ण मनोयोग से रेस्क्यू कार्य में लगी हुई है।

बारिश से खराब सड़कों की मरम्मत के लिए 965 करोड़ रुपये स्वीकृत

पीडब्ल्यूडी की समीक्षा बैठक, सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने के लिए विशेष अभियान चलाया जायेगा

हर सात दिन में रिर्पोट दे,सड़क खराब मिली तो निरीक्षणकर्त्ता की जिम्मेदारी तय होगी : उपमुख्यमंत्री,दिया कुमारी

चमकता राजस्थान

जयुपर, 26 दिसम्बर। उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने प्रदेश में सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने के लिए सार्वजनिक निर्माण विभाग के अधिकारियों को विशेष अभियान चला कर दुर्घटना सम्भावित क्षेत्रों में सड़कों की मरम्मत, अतिक्रमण हटाने, स्पीड ब्रेकर ठीक करवाने, जेबरा क्रोसिंग, साईनेंज सहित अन्य आवश्यक सुविधायें विकसित करने के निर्देश दिए है। उपमुख्यमंत्री गुरुवार को निर्माण भवन में आयोजित समीक्षा बैठक को सम्बोधित कर रही थी।

● **हर सात दिन में देनी होगी निरीक्षण रिर्पोट-**

उपमुख्यमंत्री ने सभी अधिकारियों को नियमित फिल्ड विजिट कर सड़कों की गुणवत्ता जांच करने के निर्देश दिए है। उन्होनें निर्देश दिए है कि अधिकारी जिन सड़कों का निरीक्षण करेंगे उसकी रिर्पोट हर सात दिन में प्रस्तुत करेंगे। उपमुख्यमंत्री ने कहा कि यदि निरीक्षण की गई सड़कों की गुणवत्ता खराब मिलेगी तो निरीक्षण करने वाले अधिकारी की जिम्मेदारी तय होगी उपमुख्यमंत्री ने कहा है कि कार्बन फुट प्रिंट कम करने के लिए सड़क निर्माण में पर्यावरण हितैषी सामग्री का इस्तेमाल करें। उन्होनें बायो बिटूमिन का प्रयोग कर एक सड़क पायलेट प्रोजेक्ट के रूप में विकसित करने के निर्देश दिए है।

● **डीपीआर निर्माण सेंट्रलाइज्ड हो, ताकि प्रोजेक्टस समय पर पूरे हो-**

उपमुख्यमंत्री ने कहा है कि बजट घोषणाओं सहित अन्य योजनाओं के तहत बनने वाले पुल, सड़क आदि की डीपीआर बनाने का कार्य सेंट्रलाइज्ड किया जाये ताकि समय पर प्रोजेक्टस को शुरू करवाकर उन्हें तय अवधि में पूरा किया जा सकें। उन्होंने कहा प्रायः देखने में आता है कि स्थानीय स्तर पर डीपीआर बनाने के काम में देरी होने की वजह से काम समय पर शुरू नहीं हो पाते है और जनता को उसका तय समय पर लाभ नहीं मिल पाता है।

● **अभियान के दौरान दुर्घटनाएं कम करने के लिए यह कार्य होंगे-**

सड़क पर दृश्यता बढ़ाने के उद्देश्य से सड़क के शोल्डर्स की जंगल क्लियरेंस के कार्य, सड़क भूमि पर अतिक्रमण हटाने हेतु जिला प्रशासन के साथ समन्वयकरआवश्यककार्यवाही, अनाधिकृत मीडियन कट को बंद किया जाना, रोड साइनेज व लेन मार्किंग के कार्य को प्राथमिकता के साथ पूर्ण करना, जंक्शन्स पर कैट्स ऑय लगाने व रम्बल स्ट्रिप्स के कार्य, घुमंतू जानवरों की रोकथाम हेतु स्थानीय निकाय से समन्वय कर सड़को से दूर करना तथा एनजीओ अथवा रक्षा मित्र के साथ मिलकर कालर रिफ्लेक्टर लगाने सहित अन्य महत्वपूर्ण कार्य किए जायेगें। इसके साथ ही सड़क मिडियन पर लगे पेड़ों की ऊँचाई एक निश्चित हाईट के बाद छंटाई करवाने के कार्य भी किए जायेगें।उपमुख्यमंत्री ने नोन पेचेबल, पेचेबल सड़को, बजट घोषणाओं कि क्रियान्विति सहित विभिन्न परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा की। इस दौरान राज्य मंत्री डॉ. मजू बाघमार, प्रमुख शासन सचिव प्रवीण गुप्ता, शासन सचिव डी आर मेघवाल, मुख्य अभियंता एवं अतिरिक्त सचिव टी सी गुप्ता सहित सभी मुख्य अभियंता, अतिरिक्त मुख्य अभियंता एवं वीसी के माध्यम से सभी अधीक्षण अभियंता उपस्थित रहे।

● **बारिश से खराब सड़कों की मरम्मत के लिए 965 करोड़ रुपये स्वीकृत–**

उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने बताया कि वर्षा से क्षतिग्रस्त सड़कों की स्थाई मरम्मत के लिए 964.43 करोड़ रुपये की वित्तिय स्वीकृति जारी कर दी गई है इस राशि से प्रदेश में वर्षा से क्षतिग्रस्त लगभग 2328 कार्यों की स्थायी मरम्मत करवाई जायेगी। इस राशि से सड़क पुल आदि की मरम्मत करवाई जायेगी।

जिला स्तरीय महिला कार्यकर्ता क्षमता वर्धन शिविर का आयोजन

चमकता राजस्थान/भरतपुर (राजवीर सिंह)। दलित अधिकार केंद्र भरतपुर द्वारा दिनांक 27 दिसंबर 2024 को समय सुबह 11:00 से प्रताप वाटिका मैरिज गार्डन में एक दिवसीय जिला स्तरीय महिला कार्यकर्ता क्षमतावर्धन शिविर का आयोजन किया जा रहा है। दलित अधिकार केंद्र जिला समन्वयक अतर सिंह भड़ाना ने बताया कि इस जिला स्तरीय कार्यकर्ता क्षमता वर्धन शिविर में भरतपुर जिले के विभिन्न ब्लाकों से दलित महिला व मानव अधिकारों पर कार्य करने वाले कार्यकर्ता एडवोकेट जनप्रतिनिधि सामुदायिक प्रतिनिधि महिला समूह लीडर बुद्धिजीवी एवं युवा शक्ति भाग लेंगे। शिविर में मुख्य रूप से जेंडर संवेदीकरण एवं सुरक्षात्मक नीतियों पर चर्चा कर महिला सुरक्षा एवं महिलाओं का क्षमता प्रदान कर संविधान में निहित समानता के हक अधिकारों के प्रति जागरूक एवं सजग होकर महिला लीडरशिप में गरिमा एवं स्वाभिमान की भावना पैदा कर राष्ट्र निर्माण में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने पर चर्चा की जावेगी।

इस जिला स्तरीय क्षमता वर्धन शिविर में दलित अधिकार केंद्र के उपनिदेशक श्रीमान चांदलाल एडवोकेट राज्यसमान में कश्मीरा सिंह आदि राज्य स्तरीय टीम महिलाओं की सुरक्षात्मक नीतियों एवं महिलाओं के हितों में बने कानून पर चर्चा करेंगें।

स्टेशन पर कोच गाइडेंस बने शो पीस, ट्रेनों के समय रहते है बंद

चमकता राजस्थान /रमेश मोदी

चौमहला /झालावाड़। चौमहला स्टेशन पर कई सुपरफास्ट व मेल एक्सप्रेस ट्रेनों का ठहराव दिया हुआ है, लेकिन यात्रियों की सुविधाओं की ओर रेलवे द्वारा कोई ध्यान नही दिया जा रहा है , कहने को तो इस स्टेशन का कायाकल्प करने के लिए अमृत भारत योजना में सम्मलित किया हुवा है ,जिसके अंतर्गत यात्रियों की सुविधाओं से जुड़े कई कार्य यहाँ निर्माणाधीन है, जिसके अंतर्गत प्लेटफार्म नंबर एक व दो पर ट्रेनों में आरक्षित व सामान्य कोच की स्थिति दर्शाने के लिए कोच गाइडेंस लगाए गए है, जो सिटी की बिजली से जोड़े जाने के कारण अक्सर ट्रेन आने के समय सिटी की बिजली कट जाने के कारण बंद हो जाते है ,जिससे यात्रियों को विशेषकर बुजुर्गों ,महिलाओं व बच्चों भारी परेशानी हो रही है ,ट्रेन आने पर उनको अपने आरक्षित कोच की स्थिति पता नही चल पाता है , जिससे ट्रेन आने पर अफरा तफरी मच जाती है क्योंकि ट्रेन का ठहराव 2 मिनिट ही होता है ,ऐसे में कोई हादसा हो सकता है ,इसलिए कोच गाइडेंस को रेलवे की बिजली से जोड़ा जाय जिससे यात्रियों को असुविधा न हो ।

संक्षिप्त समाचार

उपमुख्यमंत्री डॉ. प्रेमचंद बैरवा ने बजट घोषणाओं के क्रियान्वयन को लेकर ली बैठक

चमकता राजस्थान। जयपुर! 26 दिसंबर। उप मुख्यमंत्री व परिवहन एवं सड़क सुरक्षा मंत्री डॉ. प्रेमचंद बैरवा ने गुरुवार को शासन सचिवालय में परिवहन एवं सड़क सुरक्षा विभाग से संबंधित विभिन्न बजट घोषणाओं के समयबद्ध क्रियान्वयन को लेकर उच्चाधिकारियों की बैठक ली। बैठक में डॉ. बैरवा ने कहा कि प्रदेश के वर्ष 2024-25 के लोक कल्याणकारी बजट में विभाग से संबंधित महत्वपूर्ण घोषणाएं की गई हैं। उन्होंने योजनाओं के समयबद्ध क्रियान्वयन, पारदर्शी कार्यप्रणाली तथा जन-कल्याणकारी नीतियों के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए उचित दिशा-निर्देश प्रदान किए उप मुख्यमंत्री ने इस दौरान आमजन के लिए आवागमन की सुविधाओं में बढ़ोतरी करने के लिए नए मार्ग खोलने, विभाग से संबंधित विभिन्न ऑनलाइन एवं फेसलेस सुविधाओं को बढ़ावा देने, रोडवेज के नए बस स्टैंडों की कार्य प्रगति सहित अन्य बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा कर आवश्यक दिशा–निर्देश दिए।डॉ. बैरवा ने कहा कि सड़क सुरक्षा हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। उन्होंने आमजन को सड़क सुरक्षा नियमों के प्रति जागरूक करने के निर्देश दिए। साथ ही उन्होंने सड़क सुरक्षा संबंधी विशेष अभियान चलाने की भी निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि ट्रैफिक नियमों की भी पालना सुनिश्चित की जाए तथा नियमों का उल्लंघन करने वालों पर कड़ी कार्रवाई की जाए।बैठक में शासन सचिव एवं परिवहन आयुक्त शुचि त्यागी, अपर परिवहन आयुक्त एवं संयुक्त शासन सचिव रेणु खंडेलवाल, अपर परिवहन आयुक्त सड़क सुरक्षा निधि सिंह सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

बाड़ी नगर पालिका की साधारण सभा की बैठक में हंगामा, पार्षदों ने किया बैठक का बहिष्कार

चमकता राजस्थान। धौलपुर रामदास तरुण। बाड़ी। बाड़ी नगर पालिका की साधारण सभा की बैठक बुधवार को हंगामे की भेंट चढ़ गई, जब पार्षदों ने नगर पालिका प्रशासन पर गंभीर आरोप लगाए। पार्षदों का कहना था। कि पिछले चार वर्षों में उनके वार्डों में कोई भी विकास कार्य नहीं हुआ है। वे बार-बार लेटर पैड पर समस्याओं से प्रशासन को अवगत कराते रहे हैं, लेकिन अब तक कोई समाधान नहीं हुआ है। वार्डों में सफाई का काम तक ठीक से नहीं हो पा रहा है, ऐसे में अन्य कार्यों की उम्मीद कैसे की जा सकती है, यह सवाल उठाया गया। वरिष्ठ कांग्रेसी पार्षद राजकुमार भारद्वाज ने आरोप लगाया कि नगर पालिका में भ्रष्टाचार हो रहा है, और अब तक कोई कार्य नहीं हुआ। सभी पार्षदों ने अपनी- अपनी वार्डों की समस्याओं को अधिशासी अधिकारी श्याम बिहारी गोयल के सामने रखा और बताया कि नालियां टूटी पड़ी हैं, गंदगी फैली हुई है, और पानी-कीचड़ से लोग परेशान हो रहे हैं।नगर पालिका की कार्यशैली से पार्षद पूरी तरह असंतुष्ट हैं। और उनका कहना है कि उनकी समस्याओं का समाधान नहीं हो पा रहा है। पार्षदों ने बैठक का बहिष्कार किया और बैठक में कोई भी प्रस्ताव पास नहीं हो सका। इस कार्यक्रम के मौके पर कमलेश जाटव अध्यक्ष, होतम सिंह चेयरमैन प्रतिनिधि,अहमद जमा खा, सीताराम शर्मा सफाई निरीक्षक, तेजू पाराशर, अमिताभ मीणा अकाउंटेंट, अमित गोयल जे ई एन, राजवीर सिंह जाटव पार्षद, हरी देव शर्मा, मंगल सिंह, मोनू गर्ग, रोहित मंगल आज पार्षद मौजूद रहे।

श्रीनगर पंचायत समिति में मंत्रालय कर्मचारी संगठन के जिला अध्यक्ष का 51 किलो की माला से भव्य स्वागत

चमकता राजस्थान। रघुनंदन पारीक श्रीनगर। अजमेर / श्रीनगर पंचायती राज मंत्रालय कर्मचारी संवर्ग के जिला अध्यक्ष दिनेश कुमावत का पंचायत समिति श्रीनगर स्तर पर सम्मान किया गया जिसमें समस्पंचायती राज मंत्रालय कर्मचारी संवर्ग के जिला अध्यक्ष दिनेश कुमावत का पंचायत समिति श्रीनगर स्तर पर सम्मान किया गया जिसमें समस्त पंचायत समिति स्टाफ सहायक प्रशासनिक अधिकारी महेंद्र कुमार सेन जी सहायक प्रशासनिक अधिकारी मोहम्मद यूसुफ पवार वरिष्ठ सहायक श्री बलवंत सिंह रावत मंत्रालय कर्मचारी संघ अध्यक्ष पंचायत समिति श्रीनगर एवं समस्त कनिष्ठ सहायक उपस्थित रहे इसी बीच श्री आशीष सरावगी कनिष्ठ सहायक संस्थापन शाखा पंचायत समिति श्रीनगर का पंचायत समिति स्तरीय जनसुनवाई एवं लोकापन कार्यक्रम में श्रीमती सुशील कर पलड़ा जिला प्रमुख द्वारा सम्मान किया जाने पर समस्त मंत्रालयिक संपर्क पंचायत समिति श्रीनगर द्वारा सम्मान किया गयात पंचायत समिति स्टाफ श्री महेंद्र कुमार सेन जी सहायक प्रशासनिक अधिकारी मोहम्मद यूसुफ पवार वरिष्ठ सहायक श्री बलवंत सिंह रावत मंत्रालय कर्मचारी संघ अध्यक्ष पंचायत समिति श्रीनगर एवं समस्त कनिष्ठ सहायक उपस्थित रहे इसी बीच श्री आशीष सरावगी कनिष्ठ सहायक संस्थापन शाखा पंचायत समिति श्रीनगर का पंचायत समिति स्तरीय जनसुनवाई एवं लोकापन कार्यक्रम में श्रीमती सुशील कर पलड़ा जिला प्रमुख द्वारा सम्मान किया जाने पर समस्त मंत्रालयिक संपर्क पंचायत समिति श्रीनगर द्वारा सम्मान किया गया

पुलिस थाना सदर चित्तौडगढ व साईबर सैल टीम की संयुक्त कार्यवाही

श्रम विभाग का अधिकारी बन लोगो को झांसे में ले साईबर फ्रॉड (ठगी) करने के मामले में दो आरोपी गिरफ़्तार

- **श्रम विभाग, सुकन्या योजना, पीएम किसान योजना ,जनधन योजना आदी स्कीमों का लाभ दिलाने का दिया झांसा**
- **वारदात में काम में लिए 4 मोबाईल जब्त।**

चमकता राजस्थान

चित्तौड़गढ़! (बाबू अग्नानी) चित्तौड़गढ़ श्रम विभाग के अधिकारी बन लोगो को जाल साज में फसा साईबर फ्रॉड(ठगी) करने के मामले में सदर चित्तौडगढ थाना पुलिस व साईबर सैल टीम ने संयुक्त कार्यवाही करते हुए दो आरोपियों को गिरफतार किया है। गिरफ्तार आरोपियों ने श्रम विभाग, सुकन्या योजना, पीएम किसान योजना ,जनधन योजना आदी स्कीमों का लाभ दिलाने के नाम पर कई जिलों के लोगों के साथ लाखों की ठगी की वारदाते करना स्वीकार किया हैं, वहीं वारदात में प्रयुक्त चार मोबाईल भी जब्त किये हैं।जिला पुलिस अधीक्षक सुधीर जोशी द्वारा जिले में हो रहे साईबर ठगी करने वालों के विरूद्ध कार्यवाही एवं आपराधिक गतिविधियों पर प्रभावी नियंत्रण हेतु जिले के समस्त पुलिस अधिकारीयों को निर्देशित किया गया। इसी क्रम में एएसपी चित्तौड़गढ़ सरितासिंह व डीएसपी चित्तौड़गढ़ विनय कुमार के सुपरविजन में थानाधिकारी सदर चित्तौडगढ गजेन्द्रसिह पुलिस निरिक्षक व साईबर सैल टीम की संयुक्त टीम गठीत की गई।17 दिसम्बर को प्रार्थी मदन पुत्र मोहन लाल लोधा निवासी लक्ष्मीपुरा बराडा थाना सदर चित्तौडगढ ने सदर थाने पर दी एक लिखित रिपोर्ट में बताया कि उसकी पत्नी पिन्की लोधा की पूर्व में मुत्यू हो गई थी, जिसके श्रमिक कार्ड से राजस्थान सरकार द्वारा दिये जाने वाली 2 लाख रुपये की राशी के लिए उसने ईमित्र ओछड़ी पंचायत समिती चित्तौडगढ के मार्फत आनलाइन आवेदन किया था, जिस पर उक्त राशी अभी तक नही मिली थी। 17 दिसम्बर को ही शाम को करीब 4-5 बजे उसके पास एक मोबाईल नम्बर से अज्ञात व्यक्ति का फोन आया व कहा कि वह श्रम अधिकारी चित्तौडगढ सुरेश बुनकर बोल रहा हैं, आपके खाते में राजस्थान सरकार द्वारा श्रमिक कार्ड के तहत 2 लाख की राशी स्वीकृत हो गई है, उस राशी को आपके खाते में डालने है इसके लिए आपको उनके सरकारी खाते में शुल्क के 15 हजार रुपये डालने है, जिसकी रशीद आपको मिल जायेगी। उसके द्वारा वाट्सअप पर भेजे गए स्केनर कोड पर 15 हजार रुपये डाल दिये। उसके बाद पुनःउसी नम्बर से फोन आया व कहा कि आपके खाते के एमआईसीआर नम्बर नही मिल रहे है आप 22 हजार रु सिक्युरटी पेटे उसी स्केनर पर भेज दो आपको 2 लाख के साथ आपके 22 हजार रु भी आपके खाते में आ जायेगे जिस पर पुनः उसी स्केनर पर 22 हजार रु भेज दिये। फिर उसी नम्बर से फोन आया कि आपके खाते में एक घंटे में 2 लाख 22 हजार रुपये जमा हो जायेगें जिस पर एक घंटे बाद पुनः उसी नम्बर से फोन आया व कहा कि आपके खाते से आपका पैन कार्ड लिंक नही है आप पुनः 22 हजार रु डालों जिस पर उसके खाते में और रुपये नही होने से उसने उसके भाई नारायण के फोन पे नम्बर से 22 हजार रुपये डाल दिये फिर पुनः उसका फोन आया और कहा कि आपने जो रुपये भेजे है वो हमारे खाते में नही आये है आप किसी दुसरे के खाते से पुनः 22हजार रुपये डालों जिस पर मैने मेरे भाई के अकाउन्ट से 22 हजार रुपये डाल दिये असके बाद उसने कहा कि आपके रुपये 10 मिनट में आपके अकाउन्ट में आ जायेगे तथा 66 हजार रुपये आपको कल सुबह 10बजे तक पुनः रिफंड हो जायेगे। उसके बाद उसने 1 घन्टे तक उसके एकाउंट में रुपये नही आये तो उस नम्बर पर पुनःकॉल किया तो उसने कहा कि 5 हजार रुपये और डालों नही तो आपके रुपये नही आयेगे। जिस पर उनके द्वारा मना किया और बोला कि वह थाने में जा रहा हैं, उनके अब तक ठगी कर लिए 81 हजार रुपये वापिस लौटा दो। जिस पर उसने धमकी दी कि तुम उनका कुछ नही बिगाड पाओगे, वह सब फर्जी सिम और अकाउन्ट काम मे लेते है और गाली गलौज करते हुए फोन बन्द कर दिया, उन्हें उनके साथ साईबर फ्राड होने का अन्देशा हुआ। उक्त घटना की थाना सदर चितौडगढ पर रिपोर्ट दी गई जिस पर प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू की गई।

आरोपियों द्वारा ठगी की की गई अन्य वारदातें

आरोपियों द्वारा साईबर ठगी की निम्न लोगों के साथ वारदातें करना स्वीकार किया जो डाटा रिकार्ड से भी तस्दीक हुवा है - जिला चित्तौडगढ में अलग अलग थाना सर्कल के 6 व्यक्तियों के साथ साइबर ठगी।जिला नागौर के अलग अलग थाना सर्कल के 14 व्यक्तियों के साथ साइबर ठगी।जिला जालौर के अलग अलग थाना सर्कल के 03 व्यक्तियों के साथ साइबर ठगी।जिला उदयपुर व कोटा के दो दो व्यक्ति, जिला सांचौर, सीकर व बीकानेर के एक एक व्यक्ति के साथ साइबर ठगी की है, इसके अलावा जो ठगी की है उनका रिकार्ड प्राप्त कर जॉच जारी है । आरोपियों द्वारा श्रम विभाग ,सुकन्या योजना,पीएम किसान योजना ,जनधन योजना आदी स्कीमों का झांसा देकर आवेदकों के साथ साईबर ठगी की वारदातें करना पाया गया है गौरतलब है कि आरोपी का रहा विभिन्न थानों में आपराधिक रिकार्डः

उक्त कार्यवाही में निम्न टीम सदस्यो का योगदान रहा-

थानाधिकारी सदर चित्तौडगढ गजेन्द्र सिंह पु.नि., एएसआई सुरेन्द्र सिह, साईबर सैल के हैडकानि. राजकुमार व कानि. रामावतार, थाना सदर चितौडगढ के कानि. भुपराम, धर्मेन्द्र, थाना महामंदिर जोधपुर के कानि. प्रकाश व रामनिवास।

उक्त वारदात का खुलासा करने में साइबर सेल के हैडकानि. राजकुमार व कानि. रामावतार का विशेष योगदान रहा।

● पुलिस द्वारा की गई कार्यवाहीः-

प्रकरण की गम्भीरता को देखतें हुए गठीत टीम द्वारा तकनीकी रुप से अनुसंन्धान करते हुए उक्त वारदात में काम में लिए गये अकाउन्ट व मोबाइल नम्बरो का विश्लेषण किया तो सभी नम्बर और अकाउन्ट फर्जी पाये गये जो कि दुसरों के नाम पर धोके से लिए गये पाये गये, क्योंकि मुल्जिम काफी सालों से साईबर ठगी की वारदात करते है, जो काफी शातिर प्रवृति के थे, जिनको टीम ने साइबर ठगी करने वाले पूराने रिकार्ड निकलाकर और रुट मैप बनाकर वारदात के समय काम में लिए गये नम्बरों का तकनिकी डाटा का विश्लेषण कर आरोपियों तक पहुँच आरोपियों को नामजद कर उनके बारे में सुचना प्राप्त की व उनके संदिग्ध ठिकानों पर जगह-जगह दबीश दी गई व महामंदिर थाना जोधपुर पुलिस के सहयोग से साइबर ठगी करने वाले दोनों आरोपियों को गिरफतार किये गए । गिरफ्तार आरोपियों से ठगी की राशी बरामद करना शेष है।

● आरोपियो का तरिका वारदात-

आरोपी पूर्व में ईमित्र की दुकान चलाते थे जिस कारण सभी तरह की सरकारी योजनाओं के आनलाईन फार्म भरने का काम करने से सभी वेबसाईटे खोलने और डाटा निकालने की जानकारी रखते थे,जिससे प्रार्थियों की जानकारी निकालने और मोबाईल नम्बर आसानी से निकाल लेते थे, और वेबसाईट से विभागों के अधिकारीयों की जानकारी नाम पते आसानी से निकाल लेते।उक्त आरोपियों द्वारा दुसरों के नाम पर सीम कार्ड लेकर व किराया पर अकाउन्ट लेकर ठगी की वारदात करते है ताकि जल्दी से ट्रेस नही हो वारदात करते समस ये आरोपी अपनी लगातार लोकेशन चेन्ज करते रहते है ताकि ठगी करते समय पुलिस द्वारा उनके नम्बरों को ट्रेस करे तो पकडे में नही जाये।वारदात के बाद पैसो को गेम के अकाउन्ट में ट्रान्सफर करते है ताकी खुद के अकाउन्ट पुलिस शिकायत के बाद हॉल्ड नही हो ।

ठगी करते समय अपने साथ में एक और व्यक्ति को साथ रखते है जिसको अपना अधिकारी बता ठगी के शिकार व्यक्ति से बात कराते है कि ये हमारे अधिकारी है इनसे बात कर लो जो पूरी सफाई से बात करता है, जिससे ठगी होने वाला व्यक्ति एक बार सन्तुष्ठ हो जाये।

● गिरफ्तार आरोपीः-

» दिलिप पुत्र धीरेन्द्र माली उम्र 32 साल निवासी तिवरी थाना मन्थानिया जिला जोधपुर।

» मनोहर पुत्र नगसिह ओड उम्र 27 साल निवासी जेलों थाना मन्थानिया जिला जोधपुर

25 वें राष्ट्रकथा शिविर के लिए भाग लेने स्काउट दल गुजरात रवाना

चमकता राजस्थान

फलोदी। फलोदी जिले की स्वामी विवेकानंद राजकीय मॉडल विद्यालय के छात्र और अध्यापक का दल गुजरात के लिए प्रातः रवाना हुआ ।

स्काउट मास्टर शैतान सिंह राजपुरोहित ने बताया कि 25 वें राष्ट्रकथा शिविर का आयोजन गुजरात के राजकोट जिले में उपलेटा तहसील के प्रासंला गांव में 28 दिसंबर से 5 जनवरी तक होने जा रहा है। इस कथा शिविर में फलोदी जिले की स्वामी विवेकानंद राजकीय मॉडल विद्यालय के 9 छात्र और दो अध्यापक भाग लेने के लिए आज प्रातः रवाना हुए। इस अवसर पर प्रधानाचार्य देवेंद्र थानवी और cebo किशोर कुमार बोहरा और स्थानीय संघ के सचिव रतन सिंह ने स्काउट के दल को रवाना करते हुए शुभकामनाएं दी। स्काउट के दल के साथ स्काउट मास्टर शैतान सिंह राजपुरोहित गोपी लाल माली एवम स्काउट पृथ्वीराज, महिपाल, हेमराज, गिरिराज, मानस, कुणाल, राहुल, मानवेंद्र ललित रवाना हुए।

रक्तदान शिविर का पोस्टर विमोचन

चमकता राजस्थान। जयपुर। मानव समाज सेवा संस्थान राजस्थान,सनराइज फ्रेंड्स सोसाइटी एवम ढन्ड डायबिटीज एसोसिएशन द्वारा न्यू सांगानेर रोड स्थित 70,कटेवा नगर में रक्तदान एवम चिकित्सा जांच शिविर आयोजित किया जाएगा जिसका पोस्टर विमोचन सामाजिक न्याय मंत्री अविनाश गहलोत ने किया ।इस शिविर में ब्लड प्रेशर,ब्लड शुगर,थाइरोइड,बी एम डी,फिजियो थेरेपी एवम सहाय हॉस्पिटल द्वारा आंखों की जाँच कर मोतियाबिंद का आपरेशन निःशुल्क किया जाएगा संस्थान के अध्यक्ष डॉ मुकेश गुप्ता ने बताया कि शिविर में डॉ सुनील ढन्ड,डॉ अजीत सहारण,डॉ प्रवीण कुमार, डॉ अंकिता माथुर अपनी सेवाएँ प्रदान करेंगे ।

सकारात्मक सोच के साथ युवाओं को जीवन में आगे बढ़ने का आह्वान

केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री भागीरथ चौधरी ने युवा महोत्सव - 2024 में युवाओं को किया सम्मानित

चमकता राजस्थान

अजमेर, 26 दिसंबर 2024। केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री एवं स्थानीय सांसद भागीरथ चौधरी ने गुरुवार को अजमेर जिले के माकड़वाली स्थित स्वामी विवेकानंद राजकीय मॉडल स्कूल में आयोजित ₹जिला स्तरीय युवा महोत्सव - 2024₹ में हिस्सा लिया। इस महोत्सव का आयोजन युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार के सौजन्य से जिला प्रशासन अजमेर, राजस्थान युवा बोर्ड एवं शिक्षा विभाग के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। युवाका उद्देश्य युवाओं को विज्ञान, प्रौद्योगिकी और तकनीकी नवाचारों के क्षेत्र में प्रशिक्षण देना तथा सह-शैक्षणिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से उनके व्यक्तित्व विकास को बढ़ावा देना था।कार्यक्रम में क्षेत्र के शिक्षाविदों, अधिकारियों, गुरुजनों एवं बड़ी संख्या में प्रशिक्षणार्थी युवाओं की उपस्थिति रही।

प्रतिभागी युवाओं को किया सम्मानित : केंद्रीय कृषि राज्यमंत्री भागीरथ चौधरी ने संबोधित करते हुए कहा कि युवाओं को जीवन में आगे बढ़ने के लिए सकारात्मक सोच के साथ निरंतर प्रयासरत रहना चाहिए। सरकार युवाओं को खेल, सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं और रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के लिए विभिन्न योजनाओं के माध्यम से प्रोत्साहन दे रही है। इस अवसर पर केंद्रीय मंत्री भागीरथ चौधरी ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान कर उन्हें सम्मानित किया। उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार द्वारा युवाओं को सशक्त बनाने और उनके सर्वांगीण विकास के लिए किए जा रहे कार्यों के बारे में जानकारी प्रदान की।

युवाओं के कौशल विकास को बढ़ावा दे रही सरकार : केंद्रीय मंत्री भागीरथ चौधरी कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में हमारी सरकार युवाओं के उज्जवल भविष्य के लिए कई योजनाओं और पहलों पर काम कर रही है। प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना से लाखों युवाओं को कौशल प्रशिक्षण प्राप्त हो रहा है, जबकि स्टार्टअप इंडिया और मेक इन इंडिया जैसी योजनाएं उन्हें आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रेरित कर रही हैं। नई शिक्षा नीति और डिजिटल इंडिया मिशन के तहत शिक्षा और कौशल विकास में सुधार हो रहा है, जिससे युवाओं को बेहतर अवसर मिल रहे हैं। भागीरथ चौधरी ने कहा कि फिट इंडिया मूवमेंट और खेलो इंडिया जैसी पहलों से युवाओं को शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ और खेलों में सफलता हासिल करने का मौका मिल रहा है। हमारी सरकार का उद्देश्य है कि हर युवा आत्मनिर्भर और सक्षम बने, और अपने सपनों को साकार करने के लिए अपने देश के विकास में योगदान दे।

जोन 10 में पन्द्रह बीघा भूमि पर दो नवीन अवैध कॉलोनियों को किया ध्वस्त

जयपुर विकास प्राधिकरण ने दिया प्रभावी कार्रवाई को अंजाम

अजमेर रोड भांकरोटा, जयसिंहपुरा में 30 फीट रोड सीमा को अतिक्रमण मुक्त

चमकता राजस्थान

जयपुर!(खलील कुरैशी) 26 दिसम्बर। जयपुर विकास प्राधिकरण द्वारा जोन-11 में अजमेर रोड भांकरोटा, जयसिंहपुरा में 30 फीट रोड सीमा को अतिक्रमण मुक्त करवाया गया। साथ ही जोन-10 में ईकोलोजिकल जोन ग्राम बगराना में सरकारी भूमि को अतिक्रमण मुक्त, सुमेल रोड बालाजी चेम्बर के सामने सरकारी भूमि को अतिक्रमण मुक्त, पार्वती नगर में सड़क सीमा से अतिक्रमण को हटाए गए। निजी खातेदारी की करीब 15 बीघा कृषि भूमि पर दो नवीन अवैध कॉलोनियों को प्रारम्भिक स्तर पर ही पूर्णतः ध्वस्त किया गया।उप महानिरीक्षक पुलिस कैलाश चन्द्र विश्नोई ने बताया जोन-11 के क्षेत्राधिकार में अवस्थित अजमेर रोड भांकरोटा जयसिंहपुरा जिला जयपुर में 30 फिट रोड सीमा पर कब्जा-अतिम्रमण कर पत्थर डालकर तारबंदी कर रास्ता अवरूध किया गया था जिससे स्थानीय लोगो व आमजन को रास्ते को लेकर भारी समस्या का सामना करना पड रहा था। जिसकी सूचना प्राप्त होते ही आज जोन-11 के राजस्व व तकनीकी स्टॉफ की निशादेही पर प्रवर्तन दस्ते द्वारा 30 फिट रोड सीमा को अतिक्रमण मुक्त करवाया गया। जेडीए द्वारा जोन-10 के क्षेत्राधिकार ईकोलोजिकल जोन में अवस्थित ग्राम बगराना जिला जयपुर में खसरा नम्बर 237 सरकारी नाले की भूमि पर कब्जा-अतिम्रमण कर बाउन्ड्रीवाल, टीनषेड, कोठरी का अवैध निर्माण किये जाने की सूचना प्राप्त होते ही आज जोन-10 के राजस्व व तकनीकी स्टॉफ की निशादेही पर प्रवर्तन दस्ते द्वारा सरकारी नाले की भूमि को अतिक्रमण मुक्त करवाया गया। जोन-10 के क्षेत्राधिकार में अवस्थित ग्राम सुमेल रोड बालाजी चौम्बर के सामने सरकारी भूमि, रोड सीमा पर कब्जा-अतिम्रमण कर धर्मकांटे का अवैध निर्माण किये जाने की सूचना प्राप्त होते ही आज जोन-10 के राजस्व व तकनीकी स्टॉफ की निशादेही पर प्रवर्तन दस्ते द्वारा जेसीबी मशीन व मजदूरों की सहायता से हटवाया जाकर, रोड सीमा को अतिक्रमण मुक्त करवाया गया।जोन-10 के क्षेत्राधिकार में अवस्थित ग्राम बगराना जिला जयपुर में खसरा नम्बर 238, 242 जिला जयपुर में करीब 07बीघा निजी खातेदारी कृषि भूमि पर जेडीए की बिना स्वीकृति-अनुमोदन के एवं बिना भू रूपान्तरण करवायें भूमि को समतल कर '' प्रजापति विहार'' के नाम से विगत दिवसों में मौका पाकर रातों-रात बनाई गई मिट्टी-ग्रेवल सडकें मकान का ढांचा व अन्य अवैध निर्माण कर नवीन अवैध कॉलोनी बसाने की सूचना प्राप्त होते ही प्रारंभिक स्तर पर ही आज जोन-12 के राजस्व व तकनीकी स्टॉफ की निशादेही पर प्रवर्तन दस्ते द्वारा जेसीबी मशीन व मजदूरों की सहायता से ध्वस्त किया जाकर नवीन अवैध कॉलोनी बसाने के प्रयास को विफल किया गया जोन-10 के क्षेत्राधिकार में अवस्थित सामरिया रोड जीतावाला जिला जयपुर में करीब 08 बीघा निजी खातेदारी कृषि भूमि पर जेडीए की बिना स्वीकृति-अनुमोदन के एवं बिना भू रूपान्तरण करवायें भूमि को समतल कर ''शयाम आंगन'' के नाम से विगत दिवसों में मौका पाकर रातों-रात बनाई गई मिट्टी-ग्रेवल सडकें बाउन्ड्रीवाल, टीनषेड, कोठरी व अन्य अवैध निर्माण कर नवीन अवैध कॉलोनी बसाने की सूचना प्राप्त होते ही प्रारंभिक स्तर पर ही आज जोन-12 के राजस्व व तकनीकी स्टॉफ की निशादेही पर प्रवर्तन दस्ते द्वारा सम्पादित की गई।प्रवर्तन प्रकोष्ठ जविप्रा द्वारा माह अक्टूबर वर्ष 2024 से आज तक कुल 105 नवीन अवैध कॉलोनियों को ध्वस्त कर अवैध कॉलोनी बसाने के प्रयासों को विफल किया गया। उक्त कार्यवाहियां मुख्य नियंत्रक प्रवर्तन आदर्श चौधरी के पर्यवेक्षण में उपनियंत्रक प्रवर्तन प्रथम, द्वितीय प्रवर्तन अधिकारी जोन 10, 11 तथा प्राधिकरण में उपलब्ध जाप्ते, लेबर गार्ड एवं जोन में पदस्थापित राजस्व व तकनीकी स्टॉफ की निशादेही पर प्रवर्तन दस्ते द्वारा सम्पादित की गई।प्रवर्तन प्रकोष्ठ जविप्रा द्वारा माह अक्टूबर वर्ष 2024 से आज तक कुल 105 नवीन अवैध कॉलोनियों को ध्वस्त कर अवैध कॉलोनी बसाने के प्रयासों को विफल किया गया।

संक्षिप्त समाचार

राजस्थान पेंशनर समाज शाखा बाड़ी, जिला धौलपुर

- '75 वर्ष की आयु पूर्ण करने वाले पेंशनरों का सम्मान समारोह'

चमकता राजस्थान। धौलपुर रामदास तरुण। राजस्थान पेंशनर समाज शाखा बाड़ी द्वारा 25 दिसम्बर 2024 को परशुराम धर्मशाला बाड़ी में 75 वर्ष की आयु पूरी करने वाले पेंशनरों का सम्मान समारोह आयोजित किया गया।

शाखा मंत्री वैद्य गिरीश कुमार ने बताया कि इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि पूर्व बाड़ी विधायक गिरिराज सिंह मलिंगा, अध्यक्ष सुरेश चंद दीक्षित, विशिष्ट अतिथि जिला अध्यक्ष पेंशन समाज विशंभर दयाल शर्मा, राजेंद्र शंकर पाराशर, पूर्व जिला अध्यक्ष बैजनाथ गर्ग, सर मथुरा, शिवचरन लाल बसेड़ी, अध्यक्ष एवं संरक्षक भोलाराम दीक्षित मौजूद रहे।

कार्यक्रम में सरोज शर्मा, गंगादत्त पचौरी, बच्चू सिंह यादव, उदयभान सिंह, महेश श्रीवास्तव, केशव देव गुप्ता, हरविलास समाधिया, अजमेर सिंह परमार, रामजीलाल शर्मा, गोपीलाल मित्तल, हामिद अली, नैकसिया राम, चित्तर सिंह, ओम प्रकाश शर्मा, रोशन सिंह गुर्जर, मुरारीलाल शर्मा सहित कुल 16 पेंशनरों को सम्मानित किया गया।

मुख्य अतिथि गिरिराज सिंह मलिंगा ने पेंशनरों को सम्मानित करते हुए आश्वस्त किया कि वे हमेशा पेंशनरों के दुख दर्द और समस्याओं में साथ हैं और भविष्य में भी साथ रहेंगे। जिला अध्यक्ष विशंभर दयाल शर्मा ने पेंशनरों के लिए सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के बारे में जानकारी दी और उनके मुद्दों के समाधान के लिए प्रयासरत रहने का आश्वासन दिया। कार्यक्रम का संचालन वैद्य गिरीश कुमार ने किया। अंत में सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य कल्याण प्रसाद शर्मा ने आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर कोषाध्यक्ष रमेश वैश, रामजीलाल कुशवाहा, कुंज बिहारी शर्मा, महेश भटेले, हरी बाबू गोड़, जगदीश जगरिया, नरेंद्र किलेदार, रामकुमार मीणा, प्रभाकर दीक्षित, पुरुषोत्तम अग्रवाल, जिला मंत्री अनवार अहमद, कैलाश चंद्र चिहार, राजाखेड़ा, राजेश राजोरिया, डॉ. गोपाल गोयल, शिवदयाल, मंगल मेदीराम मीणा, अशोक शर्मा, रमेश जाट, रमेश महावर, अतिराम सेमल, राजेंद्र अग्रवाल, सुरेंद्र सिंह परमार, सुरेश शास्त्री, राजवीर कटारा, ठाकुर वीरेंद्र सिंह, रामकुमार तिवारी, सुरेश अग्रवाल सहित 116 पेंशनर उपस्थित रहे और सामूहिक भोज का आयोजन किया गया।

अध्यक्ष सुरेश चंद्र दीक्षित ने वार्षिक प्रतिवेदन पढ़ा।

भाजपा कार्यकर्ताओं ने वीर बाल दिवस पर किया वीर साहिबजादों को नमन

चमकता राजस्थान

फलोदी। धर्म और सनातन संस्कृति की रक्षा हेतु सर्वोच्च बलिदान देने वाले गुरु गोविंद सिंह महाराज के साहिबजादो के बलिदान दिवस 'वीर बाल दिवस' पर जिलाध्यक्ष मनोहरलाल पालीवाल के निर्देशानुसार भारतीय जनता पार्टी जोधपुर देहात उत्तर जिले के जिला कार्यालय में आयोजित कार्यक्रम में पार्टी कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारियों ने वीर साहिबजादो के अमर बलिदान को याद करते हुवे श्रद्धापूर्वक पुष्पांजलि अर्पित कर उनकी वीरता, देशभक्ति एवं धर्मनिष्ठा को कृतज्ञता पूर्वक नमन किया ।

'वीर बाल दिवस' कार्यक्रम को संबोधित करते हुए वक्ताओं ने कहा कि 26 दिसंबर का वह दिन जब छोटी सी उम्र में गुरु गोविंद सिंह के साहबजादौ ने अपने प्राणों की आहुति दे दी थी, साहिबजादे जोरावर सिंह और फतेह सिंह की आयु कम थी लेकिन उनका हौसला आसमान से भी ऊंचा था। साहिबजादौ का पावन बलिदान युगों युगों तक राष्ट्र और धर्म की रक्षा हेतु हम सभी को प्रेरणा देता रहेगा।प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'वीर बाल दिवस' के माध्यम से साहबजादो की अमर गाथा को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मान प्रदान करने ऐतिहासिक कदम उठाया है जो आने वाली पीढियां को हमेशा प्रेरणा एवं शिक्षा देती रहेगी। उनके शौर्य, वीरता समर्पण और बलिदान को आज नमन करने का दिन है।

जिला मीडिया प्रभारी सुनिल कुमार बुरड़ ने कहां कि गुरु गोविंद सिंह जी के साहिबजादो ने छोटी उम्र में अपने सिद्धांतों पर दृढ रहे तथा अपने प्राणों का त्याग करना स्वीकार किया लेकिन धर्म और स्वाभिमान से समझौता नहीं किया, इनका बलिदान धर्म संस्कृति की रक्षा हेतु अद्भुत मिसाल है।

कार्यक्रम में जिला महामंत्री एवं कार्यक्रम संयोजक रतन मेघवाल, जिला उपाध्यक्ष धनसुख टरू, ओम बोहरा, जिला मीडिया प्रभारी सुनिल कुमार बुरड़, सदस्यता अभियान जिला सहसंयोजिका चन्द्रकला बोहरा, सीमा चौहान, एस.टी मोर्चा जिलाध्यक्ष केवलराम मेघवाल, मुकेश भील, मोती पुरोहित, शहर मण्डल अध्यक्ष शिवकुमार व्यास, लता थानवी, संगीता व्यास, सुशिला व्यास, जुगल किशोर गुचिया, हरीश दवे, गोपाल रंगा, रजीव देवड़ा, तिलोक प्रजापत, लक्ष्मीनारायण व्यास, भरत मेघवाल, कमल किशोर जीनगर, जेठमल लोढ़ा एवं भाजपा कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का संचालन शहर मण्डल अध्यक्ष शिवकुमार व्यास ने किया।

पूर्व भाजपा प्रदेश मंत्री महेंद्र सिंह जाटव के निवास पर भागवत कथा का शुभारंभ,

- आसपास के गावो में निकाली भव्य कलश यात्रा

चमकता राजस्थान। वैर (राजवीर सिंह)। उपखण्ड के गांव नगला पचौरा (चक धरसोनी) में बीते कल 26 दिसंबर गुरुवार को पूर्व भाजपा प्रदेश मंत्री एवं पूर्व कृषि उपज मण्डी चेयरमैन महेंद्र सिंह जाटव ने अपने निज निवास पर भागवत कथा का सप्ताह ज्ञान यज्ञ का भव्य शुभारंभ डीजे बाजे से कलश यात्रा के साथ आसपास के गांव आजादपुरा, नगला खेड़ली, नगला चरणदास, नगला खरबेरा में हजारों की संख्या में श्रद्धालुयों के साथ शोभायात्रा निकाली। इस आध्यात्मिक आयोजन में उपस्थित भक्तगण डीजे की धुन पर भक्तिभाव में सराबोर नजर आए साथ में विराजमान प्रख्यात कथा वाचक पंडित अतुल कुमार शास्त्री ने अपने प्रेणादायक प्रवचनों से उपस्थित जनसमूह को मोहित कर दिया कथा के शुभारंभ पर उन्होंने भागवत महापुराण के महत्त्व और जीवन में इसके आदर्शों के अनुपालन पर प्रकाश डाला । हवन कार्यक्रम 1 जनवरी 2025 एवं प्रसादी ग्रहण का आयोजन 2 जनवरी 2025 को निज निवास पचौरा में किया जाएगा।

जिला परिषद आपके द्वार के तहत जिला प्रमुख सुशील कंवर पलड़ा ने की जनसुनवाई

चमकता राजस्थान /रघुनंदन पारीक

श्रीनगर/अजमेर/ नसीराबाद। श्रीनगर पंचायत समिति के पटेल मैदान में गुरुवार को जिला परिषद अजमेर की जिला प्रमुख सुशील कंवर पलाड़ा ने जनसुनवाई कर ग्रामीणों की समस्याओं का समाधान किया। जनसुनवाई में जिला स्तरीय अधिकारी मौजूद रहे। इस दौरान भारतीय को खो-खो को संघ के अध्यक्ष एवं समाज सेवी भंवर पलाड़ा ने भी ग्रामीणों की समस्याएं सुनी। जिला प्रमुख पलाडा ने श्रीनगर पंचायत समिति में 10 करोड़ के 69 कार्यों का लोकार्पण किया। आयोजित समारोह में ग्रामीणों को आबादी भूमि के पटटे भी सौंपे गए । किसानों को अनुदान पर दवा छिड़कने की मशीन सौपी गई । जनसुनवाई के दौरान उपस्थित ग्रामीणों को संबोधित करते हुए जिला प्रमुख सुशील कंवर पलाड़ा ने कहा कि वे जनता की सेवा के लिए राजनीति में आई है। विधायक तथा जिला प्रमुख के पद पर रहते हुए 15 वर्षों में गांव के अंतिम छोर पर बैठे आम आदमी के लिए काम करने की शपथ ली है। जिला प्रमुख पलाड़ा ने कहा कि पद पर रहे या नहीं रहे उनके घर के दरवाजे हमेशा जरूरतमंद के लिए खुले हुए हैं। समारोह को भाजपा नेता भंवर सिंह पलाड़ा ने भी संबोधित किया । पलाड़ा ने कहा कि पंचायत समिति श्रीनगर की विभिन्न ग्राम पंचायत में जिला परिषद के विभिन्न मदों से रिकार्ड विकास कार्य करवाए गए हैं। उन्होंने कहा कि जनता के बीच में जाकर उनकी समस्याएं सुना सरकार का काम है। जो लोग जिला परिषद नहीं पहुंच पाए उनके लिए प्रशासन गांवों तक पहुंचकर उनकी समस्या सुनने की कोशिश कर रहा है। पलाड़ा ने कहा कि पद पर रहे या नहीं उनके घर का दरवाजा हमेशा खुला है 15 वर्ष से गरीबों की मदद करने में जुटे हैं। विधवा महिला की बालिका की शादी के लिए जिला प्रमुख सुशील कंवर पलाड़ा अपने मानदेय की राशि से सहयोग करती है। जिला परिषद सदस्य श्रवण सिंह रावत ने भी उपस्थित ग्रामीणों को संबोधित किया रावत ने बताया कि पेयजल संकट हेतु अब 48 घंटे में होगी जलापूर्ति इस दौरान जिला परिषद की अतिरिक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी अपूर्वा परवाल श्रीनगर विकास अधिकारी महेश चौधरी, श्रीनगर प्रधान कमलेश गुर्जर ने 29 ग्रामीणों को आबादी भूमि के पटटे व 6 ग्रामीणों को अनुदान वितरण तहत चेक सौपे गए। जिला प्रमुख पलाड़ा के निजी सचिव करण सिंह जोधा ने बताया कि जनसुनवाई के दौरान 15 को जन्म मृत्यु प्रमाण पत्र, पेंशन स्वीकृति तीन, प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत पांच व्यक्तियों को आवास के लिए चयन, खेत सुधार के पांच व्यक्तियों का चयन महिला बाल विकास राजिविका समूह में महिलाओं को लोनिग, पांच दिव्यांगों को प्रमाण पत्र जारी किए गए वह उनकी यूडी आईडी जेनरेट की गई। जनसुनवाई के दौरान पांच विभागों कृषि, शिक्षा ,स्वास्थ्य, महिला एवं बाल विकास विभाग व सामाजिक न्याय के आला अधिकारी मौजूद रहे। जनसुनवाई में श्रीनगर सरपंच दिलीप राठी, नांदला सरपंच मानसिंह रावत, फारकिया सरपंच सोनू पडियार, झड़वासा सरपंच भंवर सिंह गौड, न्यारा सरपंच मुकेश गुर्जर , राजोसी सरपंच इकबाल खान, देराठू सरपंच विजेंद्र सिंह ,मावशिया सरपंच उगमाराम, तिलाना सरपंच कानाराम गुर्जर ,जिलावडा सरपंच रफीक शाह ने जनसुनवाई शिविर के दौरान मौजूद रहकर ग्रामीणों की समस्या समाधान करवाने में सहयोग किया। मुख्य रुप से समस्या रही पानी बिजली परिवहन की मांग पर ग्रामीणों ने समस्या अवगत कराई व श्रीनगर बावड़ी बाला जी बाल हनुमान मंदिर में सामुदायिक भवन एवं हेडपम्प की माँग।

संक्षिप्त खबरें

डिस्कॉम कार्मिकों की पुरानी पेंशन लागू करने के आदेश, कर्मचारियों में खुशी की लहर

चमकता राजस्थान। फलोदी। कर्मचारियों के लगातार प्रदर्शनों आंदोलनों नाराजगी के कारण 20 साल बाद अब डिस्कॉम के कर्मचारियों को भी पुरानी पेंशन योजना का लाभ मिलेगा। इसके आदेश जारी हो गए हैं। इससे डिस्कॉम के कर्मचारियों को पुरानी पेंशन योजना का लाभ मिलेगा।

करन सिंह राजपुरोहित जिलाध्यक्ष डिस्कॉम श्रमिक संघ जिला जोधपुर प्रदेश प्रचार मंत्री जोधपुर ने बताया कि डिस्कॉम दरअसल सरकार ने जनवरी 2004 में पुरानी पेंशन बंद कर नई पेंशन योजना लागू की थी। इसमें उसके बाद लगे कर्मचारियों को सीपीएफ (केंद्रीय भविष्य निधि) पेंशन दिए जाने का प्रावधान किया गया था। रिटायरमेंट के समय राशि का भुगतान किया जाता था। यह पेंशन एक हजार से 3 हजार तक ही मिलती थी। इसका कर्मचारी संगठन विरोध कर रहे थे। राज्य सरकार ने अन्य विभागों में पुरानी पेंशन लागू कर दी थी, लेकिन डिस्कॉम में इसे लागू नहीं किया गया था।

सेवानिवृत्ति के समय के बेसिक वेतन का 50 फीसदी पेंशन के रूप में मिलेगा

- **NPS में रिटायरमेंट पर एक साथ मिलते थे रुपए, पेंशन कम थी**

अभी तक कर्मचारियों को नई पेंशन योजना में सीपीएफ में बेसिक वेतन की 12 फीसदी कटौती की जाती थी। इतनी ही राशि डिस्कॉम वहन करता था। लेकिन अब पुरानी पेंशन में जीपीएफ कटौती होगी। जिसमें बेसिक का 12 प्रतिशत हिस्सा पेंशन में काटा जाएगा।

नई पेंशन योजना अव्यवहारिक थी। रिटायमेंट के समय मिलने वाली राशि कुछ ही दिनों में खर्च हो जाती थी। पेंशन एक हजार से 3 हजार तक मिलती थी। अब पेंशन आखिरी बेसिक की 50 फीसदी मिलेगी। विद्युत कर्मचारियों को बुढ़ापे की लाठी मिली है जिससे कर्मचारी संगठनों की बहुत बड़ी जीत है।

कोहरे में धीमी हुई ट्रेनों की रफ्तार, अवध एक्सप्रेस-लखनऊ मेल समेत 18 ट्रेनें लेट

नई दिल्ली/एजेंसी। उत्तर भारत में कोहरे का कहर शुरू हो गया है। आज राजधानी दिल्ली घना कोहरे में लिपटी हुई है। इसका असर यातायात पर भी देखने को मिलने लगा है। भारतीय रेलवे के ताजा अपडेट के मुताबिक, घने कोहरे के कारण देश के विभिन्न हिस्सों से दिल्ली आने वाली 18 ट्रेनें देरी से चल रही हैं। इसमें अवध-असम एक्सप्रेस, लखनऊ मेल व सत्याग्रह एक्सप्रेस भी शामिल हैं। रेलवे ने देरी से चल रही ट्रेनों की लिस्ट जारी की है। हालांकि दिल्ली हवाई अड्डे के अधिकारियों का कहना है कि एयरपोर्ट पर विजिबिलिटी कम है लेकिन सभी उड़ानों का संचालन सामान्य चल रहा है। बता दें कि 25 दिसंबर को कुछ उड़ानों पर असर देखने को मिला था।

वहीं मौसम वैज्ञानिकों ने पूर्वानुमान जताया है कि 26 से 28 दिसंबर तक दिल्ली में देर रात और सुबह के समय घना कोहरा छाया रहेगा। इसमें आंशिक रूप से बादल छाए रहने तथा शाम या रात के समय हल्की बारिश होने की संभावना भी जताई गई है। इसके अलावा सुबह के समय मुख्य सतही हवा उत्तर-पूर्व दिशा से आने की उम्मीद है, जिसकी गति 4 किमी/घंटा से कम होगी।

वहीं प्रदूषण की बात करें तो क्रिसमस के दिन भी शहर की वायु गुणवत्ता बहुत खराब रही। दिल्ली का 24 घंटे का वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) शाम 4 बजे 336 के साथ बहुत खराब श्रेणी में दर्ज किया गया। आज भी हाल कुछ ऐसा ही है। सुबह 6 बजे के अपडेट के मुताबिक आज औसत एक्यूआई 343 के साथ बहुत खराब श्रेणी में दर्ज किया गया। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के अनुसार, दिल्ली की वायु गुणवत्ता लगातार तीसरे दिन भी बहुत खराब श्रेणी में बनी हुई है, इससे पहले यह गंभीर श्रेणी में थी।

कांवड़ मार्ग पर दर्दनाक हादसा, पेड़ से टकराई कार, आगरा के दंपति की मौत

मेरठ/एजेंसी। बुधवार दोपहर सरधना थाना क्षेत्र के चौधरी चरण सिंह कांवड़ मार्ग पर दर्दनाक हादसे में दंपति की जान चली गई। मसूरी घूम कर लौट रहे दंपति की कार बाइक सवार को बचाने में पेड़ से टकरा गई। मृतकों की पहचान आगरा निवासियों के रूप में हुई है।

बताया जाता है कि बुधवार की दोपहर लगभग 3:30 बजे सरधना थाना क्षेत्र में कांवड़ मार्ग पर कपसाड़ गांव के सामने तेज रफ्तार कार एक बाइक सवार को बचाने के प्रयास में पेड़ से टकरा गई। हादसे में कार के परखच्चे उड़ गए। मौके पर पहुंची पुलिस द्वारा दुर्घटनाग्रस्त कार में फंसे एक पुरुष और महिला को लहूलुहान हालत में सरधना सीएचसी ले जाया गया। जहां डॉक्टरों ने दोनों को मृत घोषित कर दिया।

मृतक की जेब से मिले कागजात के आधार पर उसकी पहचान आगरा निवासी 40 वर्षीय अभिषेक सेंगर व उसकी पत्नी रेखा सेंगर के रूप में हुई। जांच के दौरान पता चला कि दंपति मसूरी घूम कर वापस लौट रहे थे। इंस्पेक्टर प्रताप सिंह ने बताया कि मृतकों के परिजनों को घटना की सूचना दे दी गई है। दोनों शवों को मोर्चरी भेज दिया गया है।

रोहन बोपन्ना और सुमित नागल के लिए खास रहा वर्ष 2024

बोपन्ना पुरुष युगल में पहली बार दुनिया के नंबर 1 खिलाड़ी बने, नागल ने शीर्ष 100 में किया पदार्पण

एजेंसी

नई दिल्ली। वर्ष 2024 भारतीय टेनिस के लिए उतार-चढ़ाव वाला रहा, लेकिन कुछ ऐसे क्षण भी थे जो उल्लेखनीय रहे और एक उज्जवल भविष्य की उम्मीदों को जीवित रखा, विशेषकर रोहन बोपन्ना का ऑस्ट्रेलियन ओपन में खिताब जीतने के सिलसिले ने उन्हें पुरुष युगल में पहली बार विश्व नंबर 1 बनने वाला सबसे उम्रदराज खिलाड़ी बना दिया और सुमित नागल ने एटीपी टॉप 100 में प्रवेश किया।

चौथे सर्वोच्च नागरिक सम्मान पद्म श्री पुरस्कार के लिए भी चुना गया

बोपन्ना की ऑस्ट्रेलियन ओपन की जीत

19 अलग-अलग जोड़ीदारों और 61 प्रयासों के बाद, बोपन्ना ने आखिरकार पुरुष युगल ग्रैंड स्लैम खिताब जीत लिया, जिसकी तलाश वह तब से कर रहे थे, जब उन्होंने 22 साल पहले चेन्नई में युगल में एटीपी टूर की शुरूआत की थी। बोपन्ना और उनके ऑस्ट्रेलियाई जोड़ीदार मैथ्यू एबडेन ने मेलबर्न के रॉड लेवर एरिना में इटली के सिमोन बोलेली और एंड्रिया वावस्सोरी को 7-6(0), 7-5 से हराकर ऑस्ट्रेलियन ओपन का खिताब जीता। इस उपलब्धि ने बोपन्ना को पहली बार पुरुष युगल में विश्व नंबर 1 खिलाड़ी बनने वाले सबसे उम्रदराज खिलाड़ी और ओपन युग में मेजर खिताब जीतने वाले सबसे उम>दराज व्यक्ति बना दिया। उन्हें चौथे सर्वोच्च नागरिक सम्मान पद्म श्री पुरस्कार के लिए भी चुना गया।

सुमित नागल ने शीर्ष 100 में जगह बनाई

चेन्नई ओपन एटीपी चैलेंजर की शुरूआत में 121वें स्थान पर रहे नागल ने एटीपी रैंकिंग में शीर्ष 100 में जगह बनाने के लिए हरसंभव प्रयास किया। नागल 2019 में प्रजनेश गुणेश्वरन के बाद शीर्ष 100 की बाधा को पार करने वाले पहले भारतीय बने, क्योंकि उन्होंने फाइनल में इटली के लुका नारदी को 6-1, 6-4 से हराकर एटीपी चैलेंजर टूर पर अपना पांचवां खिताब जीता। नागल ने सभी चार मेजर के साथ-साथ पेरिस ओलंपिक में भी मुख्य ड्रॉ खेला।

मेलबर्न टेस्ट: ऑस्ट्रेलिया ने 6 विकेट पर बनाए 311 रन

चार बल्लेबाजों ने लगाया अर्धशतक

एजेंसी

मेलबर्न। ऑस्ट्रेलिया ने भारत के खिलाफ बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के तहत यहां खेले जा रहे बॉक्सिंग डे टेस्ट मैच के पहले दिन 6 विकेट पर 311 रन बना लिए हैं। का खेल खत्म होने पर स्टीव स्मिथ 68 और कप्तान पैट कमिंस 8 रन बनाकर नाबाद हैं। ऑस्ट्रेलिया की तरफ से चार बल्लेबाजों स्टीव स्मिथ (नाबाद 68) उस्मान ख्वाजा (57), मार्नस लाबुशेन (72) और सैम कोंस्टास (60) ने अर्धशतक लगाए।

इस मैच में ऑस्ट्रेलिया ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। सैम कोंस्टास और उस्मान ख्वाजा ने ऑस्ट्रेलिया को अच्छी शुरूआत दिलाई। विशेषकर कोंस्टास ने टी-20 प्रारुप की तरह बल्लेबाजी करनी शुरू की। उन्होंने खासकर बुमराह पर निशाना साधा और उनकी जमकर खबर ली। देखते ही देखते उन्होने अपना अर्धशतक भी पूरा कर लिया। ख्वाजा और कोंस्टास ने 19.1 ओवर में 89 रन जोड़ लिये। रवींद्र जडेजा ने इसी स्कोर पर कोंस्टास को एलबीडब्ल्यू कर यह साझेदारी तोड़ी। कोंस्टास ने 65 गेंदों पर 6 चौके और 2 छक्के की बदौलत 60 रन बनाए।

इसके बाद उस्मान ख्वाजा और मार्नस लाबुशेन ने दूसरे विकेट के लिए 65 रनों की साझेदारी की। 154 के कुल स्कोर पर बुमराह ने ख्वाजा को आउट कर यह साझेदारी तोड़ी। ख्वाजा ने 57 रनों शानदार अर्धशतकीय पारी खेली। यहां से लाबुशेन और स्मिथ ने एक बार फिर से पारी संभाली और तीसरे विकेट के लिए 83 रनों की साझेदारी की। इस साझेदारी को वाशिंगटन सुंदर ने तोड़ा। सुंदर ने 237 के कुल स्कोर पर लाबुशेन को पवेलियन भेज भारत को तीसरी सफलता दिलाई। लाबुशेन के आउट होने के बाद बुमराह ने ट्रैविस हेड (00) को बोल्ड कर भारत को बड़ी राहत दिलाई।

हमें एचआईएल ने नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया : हरमनप्रीत सिंह

एजेंसी

राउरकेला। भारतीय पुरुष हॉकी टीम के कप्तान और स्टार ड्रैग-फ्लिकर हरमनप्रीत सिंह ने आगामी हीरो हॉकी इंडिया लीग (एचआईएल) सीजन में सूरमा हॉकी क्लब का नेतृत्व करने की तैयारी के बारे में अपनी उत्सुकता व्यक्त की है, जो 28 दिसंबर, 2024 से शुरू होने वाला है। हाल ही में नीलामी के दौरान सूरमा हॉकी क्लब द्वारा 78 लाख में खरीदे जाने के बाद हरमनप्रीत सिंह एचआईएल इतिहास में सबसे महंगे खिलाड़ी बन गए और वह अपने अनुभव और ड्रैग फ्लिकिंग कौशल को फ्रैंचाइजी में लाने के लिए उत्सुक हैं। उन्होंने हॉकी इंडिया के हवाले से कहा, मैं सूरमा हॉकी क्लब के खिलाड़ी के रूप में भारतीय हॉकी के इस नए अध्याय की शुरूआत करने और हीरो हॉकी इंडिया लीग में प्रतिस्पर्धा करने के लिए रोमांचित हूं। लीग खिलाड़ियों को अपने कौशल का प्रदर्शन करने के लिए एक शानदार मंच प्रदान करती है और मैं इस सीजन में टीम की सफलता में योगदान देने के लिए उत्सुक हूं।

हीरो हॉकी इंडिया लीग सात साल के अंतराल के बाद फिर से शुरू हो रही है, लेकिन लीग की वापसी के साथ ही महिला लीग की शुरूआत भी हो रही है, जो भारत में अपनी तरह की पहली लीग होगी। हरमनप्रीत ने कहा, भारतीय पुरुष हॉकी टीम में आज भी एचआईएल का प्रभाव देखा जा सकता है। ओलंपिक में टीम की सफलता का श्रेय लीग को जाता है, जिसने हमें कम उम्र में ही काफी कुछ सिखाया। जिन खिलाड़ियों को आप आदर्श मानते हैं, उनके साथ खेलना और उनके खिलाफ रोजाना प्रतिस्पर्धा करना, हमें जितना हम सोच सकते थे, उससे कहीं

बेहतर बनाता है। इस बार महिला एचआईएल भी शुरू हो रही है, मुझे यकीन है कि यह भारतीय महिला हॉकी टीम को भविष्य में और भी ऊंचाइयों पर ले जाएगी। सूरमा हॉकी क्लब के कोच जेरोन बार्ट हैं, जबकि भारतीय हॉकी के दिग्गज सरदार सिंह उनके मेंटर हैं। हरमनप्रीत के शानदार ट्रैक रिकॉर्ड में राष्ट्रीय सीनियर टीम के लिए 234 मैचों में 205 गोल करना शामिल है।और वह विवेक सागर प्रसाद, गुरजंत सिंह, विक्टर वेगनेज और जेरेमी हेवर्ड जैसे विश्व स्तरीय साथियों के साथ एचआईएल में भी यही दोहराना चाहेंगे। हरमनप्रीत ने कहा, एचआईएल हम सभी के लिए एक शानदार अनुभव होने जा रहा है। यह एक रोमांचक प्रतियोगिता होने जा रही है जो हमें हमारे अंतरराष्ट्रीय साथियों के खिलाफ खड़ा करेगी और हमें अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने की चुनौती देगी।

भारत के लिए खेलना एक सपना सच होने जैसा: अनिका

एजेंसी

नई दिल्ली। महज 14 साल की उम्र में, अनिका दुबे, जिन्हें प्यार से पुणे की गोल्डन गर्ल के नाम से जाना जाता है, ने फरवरी 2025 में हांगकांग में होने वाली आगामी एशियाई टीम चैंपियनशिप के लिए भारतीय टीम में जगह बनाकर एक असाधारण उपलब्धि हासिल की है। यह उल्लेखनीय उपलब्धि उन्हें इस तरह के प्रतिष्ठित अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंट में भारत का प्रतिनिधित्व करने वाली महाराष्ट्र की सबसे कम उम्र की खिलाड़ी बनाती है।

उन्होंने इस दौरान अपनी अब तक की यात्रा पर विस्तार से बताया। अंतरराष्ट्रीय मंच पर देश का

प्रतिनिधित्व करने को लेकर अनिका ने कहा, भारत का प्रतिनिधित्व करना न केवल एक शानदार अवसर है, बल्कि एक रोमांचक अनुभव भी है। यह एक सपने के सच होने जैसा है। स्क्वैश को अब ओलंपिक 2028 में शामिल कर लिया गया है, इसलिए खिलाड़ियों के लिए तैयारी शुरू करने और एक मजबूत टीम बनाने का यह एक रोमांचक समय है।

संजय मांजरेकर ने की भारतीय टीम के चयन की आलोचना, कहा-गिल को बाहर करना कठोर कदम

एजेंसी

नई दिल्ली। पूर्व क्रिकेटर संजय मांजरेकर ने गुरुवार को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के बॉक्सिंग डे टेस्ट में रोहित शर्मा की अगुवाई वाली भारतीय टीम के चयन की आलोचना की और कहा कि बल्लेबाज शुभमन गिल को प्लेइंग इलेवन से बाहर करना एक गलत और कठोर फैसला था। टॉस के समय भारतीय कप्तान रोहित शर्मा ने पुष्टि की कि शुभमन गिल बॉक्सिंग डे टेस्ट से बाहर रहेंगे और वाशिंगटन सुंदर ने प्लेइंग इलेवन में अपनी जगह बनाई है। कप्तान ने यह भी कहा कि वह शीर्ष क्रम में बल्लेबाजी करेंगे। गुरुवार को ऑस्ट्रेलिया ने मेलबर्न क्रिकेट ग्राउंड पर बॉक्सिंग डे टेस्ट में भारत के खिलाफ टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला

किया। अपने आधिकारिक एक्स हैंडल पर मांजरेकर ने कहा कि एमसीजी में टीम इंडिया के लिए प्लेइंग इलेवन का चयन अजीब था। पूर्व क्रिकेटर ने कहा कि गिल को बाहर करने और वाशिंगटन सुंदर को शामिल करने के फैसले से न तो गेंदबाजी मजबूत हुई और न ही बल्लेबाजी।

दोनों टीमें इस प्रकार हैं

ऑस्ट्रेलिया प्लेइंग इलेवन: उस्मान ख्वाजा, सैम कोंस्टास, मार्नस लाबुशेन, स्टीवन स्मिथ, ट्रैविस हेड, मिशेल मार्श, एलेक्स कैरी (विकेट कीपर), पैट कमिंस (कप्तान), मिशेल स्टार्क, नाथन लियोन, स्कॉट बोलैंड।

भारत प्लेइंग इलेवन: यशस्वी जायसवाल, रोहित शर्मा (कप्तान), केएल राहुल, विराट कोहली, ऋषभ पंत (विकेट कीपर), रवींद्र जडेजा, नितीश कुमार रेड्डी, वाशिंगटन सुंदर, जसप्रीत बुमराह, मोहम्मद सिराज, आकाश दीप।

व्यापार

आईडेंटिकल ब्रेन्स की स्टॉक मार्केट में धांसू एंट्री, निवेशकों को हुआ जोरदार मुनाफा

लिस्टिंग होते ही पहले लोअर सर्किट पर और फिर अपर सर्किट पर पहुंचा शेयर

संवाददाता

नई दिल्ली। फिल्म, वेब सीरीज, टीवी सीरियल और कॉमर्शियल्स को वीएफएक्स सर्विस मुहैया कराने वाली कंपनी आईडेंटिकल ब्रेन्स स्टूडियोज के शेयरों की आज स्टॉक मार्केट में जोरदार एंट्री हुई। लिस्टिंग के बाद मुनाफा वसूली शुरू हो जाने के कारण इस शेयर में गिरावट आ गई और ये लोअर सर्किट लेवल पर पहुंच गया। हालांकि थोड़ी देर बाद ही खरीदारों ने दोबारा जोर लगाया, जिससे इस शेयर में तेजी का रुख बन गया।

आईपीओ के तहत कंपनी ने 54 रुपये के भाव पर शेयर जारी किए थे। आज नेशनल स्टॉक एक्सचेंज के एसएमई प्लेटफॉर्म पर ये शेयर 75.93 प्रतिशत प्रीमियम के साथ 95 रुपये के भाव पर लिस्ट हुए।

लिस्टिंग के तुरंत बाद मुनाफा वसूली शुरू हो जाने के कारण थोड़ी ही देर में ये शेयर टूट कर 90.25 के लोअर सर्किट लेवल पर पहुंच गया। राहत की बात यही रही कि थोड़ी ही देर बाद खरीदारों ने जोर लगाया, जिसकी वजह से ये शेयर लोअर सर्किट के फंदे से निकल कर 99.75 रुपये के अपर सर्किट लेवल पर पहुंच गया। इस तरह कंपनी के आईपीओ निवेशकों को पहले ही दिन इस शेयर से 84.72 प्रतिशत का फायदा हो चुका है। आईडेंटिकल ब्रेन्स स्टूडियोज का 19.95 करोड़ रुपये का आईपीओ 18 से 20 दिसंबर के बीच सब्सक्रिप्शन के लिए खुला था। प्राइमरी मार्केट में इस आईपीओ को जबरदस्त रिस्पॉन्स मिला था, जिसके कारण ये ओवरऑल 544.28 गुना सब्सक्राइब हो गया था। इसमें क्वालिफाइड इंस्टीट्यूशनल बायर्स (क्यूआईबी) के लिए रिजर्व पोर्शन में 187.36 गुना सब्सक्रिप्शन आया था।

सर्राफा बाजार में तेजी से महंगा हुआ सोना, चांदी की भी बढ़ी चमक

एजेंसी

नई दिल्ली। घरेलू सर्राफा बाजार में तेजी का रुख नजर आ रहा है। सोने के भाव में तेजी आने की वजह से देश के ज्यादातर सराफा बाजारों में 24 कैरेट सोना 77,600 रुपये से लेकर 77,450 रुपये प्रति 10 ग्राम के दायरे में कारोबार कर रहा है। इसी तरह 22 कैरेट सोना भी 71,150 रुपये से लेकर 71,000 रुपये प्रति 10 ग्राम के बीच बिक रहा है। चांदी की कीमत में भी मामूली तेजी आने के कारण दिल्ली सर्राफा बाजार में इसकी कीमत 91,500 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर पहुंच गई है। देश की राजधानी दिल्ली में 24 कैरेट सोना 77,600 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है, जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 71,150 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। वहीं देश की आर्थिक

राजधानी मुंबई में 24 कैरेट सोना 77,450 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 71,000 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। इसी तरह अहमदाबाद में 24 कैरेट सोने की रिटेल कीमत 77,500 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोने की कीमत 71,050 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। इन प्रमुख शहरों के अलावा चेन्नई में 24 कैरेट सोना आज 77,450 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर और 22 कैरेट सोना 71,000 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर बिक रहा है।

सीतारमण ने व्यापार उद्योग विशेषज्ञों के साथ की सुझाव एकत्र करने पर चर्चा

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय वित्त एवं कॉर्पोरेट मामलों की मंत्री निर्मला सीतारमण ने गुरुवार को राजधानी में निर्यात, व्यापार और उद्योग क्षेत्रों के प्रमुख हितधारकों और विशेषज्ञों के साथ बजट पूर्व परामर्श बैठक की। इस बैठक में आगामी केंद्रीय बजट 2025-26 के लिए अंतर्दृष्टि और सुझाव एकत्र करने पर चर्चा हुई।केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण 1 फरवरी, 2025 को संसद में अगले वित्त वर्ष 2025-26 के लिए बजट पेश करेंगी।

निर्मला सीतारमण की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में आगामी बजट में व्यापार एवं सेवा क्षेत्रों को मजबूत बनाने के लिए प्रमुख चुनौतियों और अवसरों पर चर्चा की गई। इस बैठक में केंद्रीय वित्त राज्य मंत्री

पंकज चौधरी, वित्त सचिव तुहिन कांता पांडे, आर्थिक मामलों के विभाग के सचिव अजय सेठ और मुख्य आर्थिक सलाहकार अनंथा वी नागेश्वरन भी शामिल हुए।

इससे पहले 24 दिसंबर को केंद्रीय वित्त मंत्री ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ जाने-माने अर्थशास्त्रियों और क्षेत्र के विशेषज्ञों से बैठक की थी। इस बैठक में केंद्रीय बजट 2025-26 के लिए उनके विचार और सुझाव मांगे गए। सीतारमण के अलावा नीति आयोग के उपाध्यक्ष सुमन बेरी, नीति आयोग के सीईओ बीवीआर सुब्रह्मण्यम, मुख्य आर्थिक सलाहकार अनंथा नागेश्वरन और सुरजीत भल्ला, डीके जोशी समेत जाने-माने अर्थशास्त्री भी बैठक में शामिल थे।

संक्षिप्त समाचार

राष्ट्रीय सेवा योजना के सात दिवसीय विशेष शिविर उद्घाटन

चमकता राजस्थान। धौलपुर रामदास तरुण। आज स्थानीय राजकुमार महाविद्यालय तुलसीवन रोड़ बाडी में राष्ट्रीय सेवा योजना के सात दिवसीय विशेष शिविर की दोनो इकाईयों का उद्घाटन मुख्य अतिथि सहायक आचार्य शेरसिंह राजकीय कॉलेज बसई नवाब द्वारा माँ सरस्वती पर दीप प्रज्वलित किया गया इसकी अध्यक्षता सहा. आचार्य मनीष कमार ने की शिविर प्रभारी अतरसिंह व मुन्नालाल ने स्वयंसेवकों को सात दिवसीय शिविर की रुपरेखा एवं उद्देश्यों के बारे में जानकारी दी इसके बाद प्राचार्य राजकुमार व व्याख्याता विष्णु शिवहरे, सावित पठान, व शयामसिंह मीणा इत्यादि राष्ट्रीय सेवा योजना का आदर्श वाक्य मैं नहीं बल्कि आप, के साथ अपने-अपने विचार व्यस्त किये।

वार्ड कप प्रतियोगिता: वार्ड 203 ने वार्ड 11 को हराकर सेमीफाइनल में बनाई जगह

चमकता राजस्थान। धौलपुर रामदास तरुण। बाड़ी: बाड़ी के महाराणा प्रताप खेल मैदान पर चल रही वार्ड कप प्रतियोगिता में गुरुवार को वार्ड 203 और वार्ड 11 के बीच पहला मैच खेला गया। टॉस जीतकर वार्ड 203 ने पहले फील्डिग का निर्णय लिया। वार्ड 11 की टीम ने निर्धारित ओवर में 139 रन बनाये। लक्ष्य का पीछा करते हुए, वार्ड 203 की टीम ने 13.4 ओवर में 3 विकेट खोकर जीत हासिल कर ली। इस जीत में मैन ऑफ द मैच का खिताब मनोज सिसोदिया को मिला, जिन्होंने 68 रन बनाए और 2 विकेट भी लिए। उन्हें वार्ड कप के आयोजक ओमवीर सिंह परमार द्वारा स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इस जीत के साथ ही वार्ड 203 की टीम ने सेमीफाइनल में प्रवेश कर लिया है। मैच में अंपायरिंग की जिम्मेदारी तलविंदर संधू और पिन्टू पोषवाल ने निभाई, जबकि स्कोरिंग का कार्य गौरव परमार ने किया। इस मौके पर सुगर सिंह अंदाना, राजू पटेल, शयाम रॉय और अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

भौड़ा गांव में चारागाह भूमि पर अवैध खनन को लेकर हुई पंचायत

- **अवैध खनन रोकने के लिए आंदोलन करने की बनाई रणनीति**

चमकता राजस्थान। वैर (राजवीर सिंह)। स्थित भौडा गांव में चारागाह भूमि पर अवैध खनन को लेकर ग्रामीणों की पंचायत आयोजित हुई। ग्रामीणों ने पंचायत में फैसला लिया की प्रशासन यदि चारागाह भूमि पर अवैध खनन को लेकर कोई कार्यवाही नहीं करता है तो बड़े स्तर पर आंदोलन किया जाएगा। जिसकी जिम्मेदारी शासन प्रशासन की होगी। गौरतलब है कि अवैध खनन के विरुद्ध लगातार पिछले 10वें दिन से आज तक साधु संत व ग्रामीणों का धरना एवं भूख हड़ताल लगातार जारी है। ग्रामीण बनबारी लाल ने बताया कि अवैध खनन से भैरव बाबा मंदिर को काफी क्षति पहुंच रही। साथ में किसानों की फसल भी चौपट हो रही है। अवैध खनन से भेड़ बकरी व मवेशियों को चराने का संकट पैदा हो रहा है। अवैध खनन मे विस्फोटक सामग्री प्रयोग करने से ग्रामीणों के रिहासी मकानों में दरारें पड़ गई है। जिससे ग्रामीणों को घरों में रहने से हर समय हादसा का भय बना रहता है। अवैध खनन से निकली हुई डस्ट से सिलोकिशिस जैसी भयानक बीमारी से ग्रामीणों का मानव जीवन संकटमय बना हुआ है। प्रशासन की अनदेखी के कारण धरना स्थल पर मौजूद ग्रामीणों की कड़कती ठंड में बीमार हो रहे हैं। ग्रामीणों ने एक पंचायत कर बड़े स्तर पर आंदोलन करने की रणनीति बनाई है।

कुमावत समाज सामूहिक विवाह सम्मेलन समिति की बैठक 30 दिसंबर को

चमकता राजस्थान। फुलेरा (दामोदर कुमावत)। कुमावत समाज सामूहिक विवाह एवं विकास समिति भंदेबालाजी कि आवशयक मिटिंग30दिसम्बरसोमवार को प्रातः11बजे कुमावत सामूहिक विवाह समिति भवन भंदे बालाजी पर आयोजित होगी। समिति महामंत्री भंवरलाल कुमावत ने बताया कि मीटिंग की अध्यक्षता पन्ना लाल सरस्वा करेंगे। मीटिंग में 1 मार्च 2025 फुलेरा दूज को होने वाले 21 में सामूहिक विवाह सम्मेलन के आयोजन हेतु टेंडर एवं व्यवस्थाओं पर विचार विमर्श कर मूर्त रूप दिया जाएगा, इस मीटिंग में सभी पदाधिकारी गण एवं सदस्य गण आमंत्रित हैं महामंत्री कुमावत ने बताया कि सामूहिक विवाह को लेकर समिति पदाधिकारी एवं सदस्य कड़ी से कड़ी जोड़ते हुए अब तक 22 जोड़ों का नामांकन किया गया है तथा दिन प्रतिदिन विवाह पंजीयन में बढ़ोतरी होने की संभावना की जा रही है।

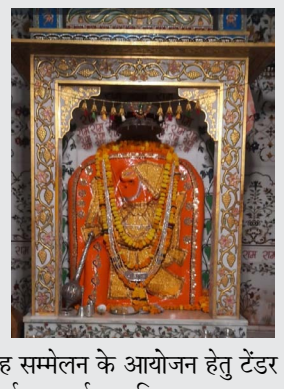

पट्टाधारक की जमीन पर अवैध कब्जा कर रातोंरात बन रही दुकानों का है मामला

जयपुर विकास प्राधिकरण बना धृतराष्ट्र, खेल रहा है अवैध निर्माण पर केवल मात्र नोटिसों का खेल

जोन-9 के क्षेत्राधिकार स्थित 'चाणक्यपुरी एक्सटेंशन भुखण्ड संख्या 32 ई' में अवैध दुकानों पर जेडीए ने साधी चुप्पी

चमकता राजस्थान

जयपुर(खलील कुरैशी)यू तो जयपुर विकास प्राधिकरण अवैध निर्माणों पर कहर बरपा रहा है लगातार अवैध कॉलोनियों पर ध्वस्तिकरण की कार्रवाई कर कॉलोनाइजर्स के हौसलों पर विराम लगाने का काम किया है ठीक इसके विपरीत जोन-9 में पट्टाधारक स्वयं की जमीन पर दुसरे व्यक्ति द्वारा कब्जा कर बनी अवैध दुकानों पर ध्वस्तिकरण के लिए जेडीए के चक्कर काट रहा है जेडीए की प्रवर्तन शाखा ने नोटिस देने के बाद भी कार्रवाई करने मे महज

लीपापोती की जा रही है मामला उपमहानिरीक्षक कैलाश चंद विश्नोई से मुख्य नियंत्रक के पास भी पहुंचा लेकिन वर्तमान समय तक कार्रवाई के नाम पर महज चुप्पी।जयपुर विकास प्राधिकरण

- **नोटिस थमाकर कार्रवाई के नाम पर महज लीपापोती**

आयुक्त ने प्रभावी व कठोर कार्रवाई सुनिश्चित करने का आश्वासन दिया है अब देखने की बात यह है कि उक्त अवैध दुकानों पर ध्वस्तिकरण की कार्रवाई कब तक होती है।भाजपा सरकार के सिद्धांत 'अंतिम पंक्ति में बैठे गरीब को मिले लाभ' का खुलेआम मखौल उड़ाया जा रहा है भाजपा सरकार का भ्रष्टाचार पर प्रभावी व कठोर कदम उठाए जा रहे हैं प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी भ्रष्टाचार पर अपना मजबूत पक्ष रखा था।पीड़ित छोटुराम का कहना है कि मेरे पास आवंटन पत्र,रसीद व सोसायटी द्वारा एन.ओ.सी भी है तथा मेरे रिश्तेदार ने मुझ पर दादागिरी करके अवैध दुकानों का निर्माण कर रहा है मेरे दो पुत्र व तीन पुत्रियां हैं जिनमें से दोनों पुत्रों की मृत्यु हो चुकी है मेरा पक्ष रखने वाला कोई नहीं है।आपको बतादें नोटिस देने के बाद दुकानों पर आनन-फानन में शटर पर नाम लिख दिए गए हैं तथा पीछे की तरफ ईंटों की दीवारें बना दी गई है पट्टाधारक लगातार जेडीए में चक्कर लगा रहा है ताकि उसे न्याय मिल सके।

इंडीक्यूब स्पेसेस लिमिटेड ने 850 करोड़ रुपये के आईपीओ के लिए दाखिल किया डीआरएचपी

चमकता राजस्थान

जयपुर। व्यापक, टिकाऊ और प्रौद्योगिकी-संचालित समाधानों के माध्यम से पारंपरिक कार्यालय अनुभव को बदलने के लिए समर्पित एक प्रबंधित कार्यस्थल समाधान कंपनी इंडीक्यूब स्पेसेस लिमिटेड ने प्रारंभिक सार्वजनिक पेशकश (आईपीओ) के माध्यम से धन जुटाने के लिए पूंजी बाजार नियामक, सेबी के पास ड्राफ्ट रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस (डीआरएचपी) दायर किया है।

इंडीक्यूब को प्रमुख उद्यम पूंजी फर्म, वेस्टब्रिज कैपिटल और प्रसिद्ध व्यक्तिगत निवेशक, आशीष गुप्ता का समर्थन प्राप्त है, जिसके अध्यक्ष, कार्यकारी निदेशक और सीईओ ऋषि दास और सीओओ और कार्यकारी निदेशक मेघना अग्रवाल हैं।

बेंगलुरु स्थित कंपनी के आईपीओ में 750 करोड़ रुपये तक के इक्विटी शेयरों का ताजा निर्गम और प्रमोटर विक्रय शेयरधारकों झ ऋषि दास और मेघना अग्रवाल द्वारा 100 करोड़ रुपये तक के इक्विटी शेयरों की बिक्री की पेशकश (ओएफएस) शामिल है।

इंडिक्यूब स्पेसेस लिमिटेड ने नए केंद्रों की स्थापना (462.6 करोड़ रुपये) के लिए पूंजीगत व्यय के वित्तपोषण के लिए नए निर्गम से प्राप्त शुद्ध आय का उपयोग करने का प्रस्ताव किया है; कंपनी द्वारा लिए गए कुछ उधारों का पूर्ण या आंशिक पुनर्भुगतान या पूर्व भुगतान (100 करोड़ रुपये); और सामान्य कॉर्पोरेट उद्देश्यों के लिए। 2015 में निगमित की गई यह कंपनी 13 शहरों में 103 केंद्रों का पोर्टफोलियो प्रबंधित करती है, जो 30 जून 2024 तक 172,451 लोगों की कुल बैठने की क्षमता के साथ सुपर बिल्ट-अप क्षेत्र में 7.76 मिलियन वर्ग फुट प्रबंधन क्षेत्र (एयूएम) को कवर करती है और इसके ग्राहकों के हिस्से के रूप में वैश्विक क्षमता केंद्रों (जीसीसी) और भारतीय उद्यमों का एक संतुलित पोर्टफोलियो है।

इंडीक्यूब के ग्राहकों में जीसीसी, भारतीय कॉरपोरेट्स, यूनिकॉर्न के साथ-साथ मित्रा, अपग्रेड, जीरोधा, नो ब्रोकर, रेडबस, जसपे, परफियोस, मोग्लिक्स, निंजाकार्ट, सीमेंस, नारायण हेल्थ जैसे क्षेत्रों के स्टार्ट-अप शामिल हैं।

इंडिक्यूब ग्रो कंपनी की मुख्य पेशकश है जो प्लग एंड प्ले वर्कस्पेस के लिए एक व्यापक कार्यस्थल समाधान का प्रतिनिधित्व करती है जिसमें इंटीरियर, प्रौद्योगिकी, सुविधा प्रबंधन और मूल्यवर्धित सेवाएं शामिल हैं। इसने विशेष क्लाइंट आवश्यकताओं की सेवा के लिए चार अतिरिक्त वर्टिकल भी विकसित किए हैं, जिनके नाम हैं इंडिक्यूब बेस्पोक, इंडिक्यूब वन, मीक्यूब और इंडिक्यूब कॉर्नरस्टोन। इसने वित्त वर्ष 2024 में 867.6 करोड़ रुपये की कुल आय दर्ज की, जबकि वित्त वर्ष 2023 में यह 601.2 करोड़ रुपये थी। वित्त वर्ष 24 में EBITDA 263.4 करोड़ रुपये रहा, जबकि Q1FY25 के लिए EBITDA 153 करोड़ रुपये था।

लचीले कार्यस्थल वाणिज्यिक कार्यालय बाजार का एक अभिन्न अंग बन रहे हैं। हाइब्रिड कार्य मॉडल का उदय, पूंजी के उपयोग में विवेक, लचीलेपन की आवश्यकता, कार्यस्थल नियोजन और कार्य संस्कृति में बदलाव लचीले कार्यस्थलों की मांग को बढ़ावा देने वाले कारकों में से हैं।

सीबीआरई की रिपोर्ट के अनुसार, भारत में लचीले कार्यस्थल का स्टॉक वर्तमान में 79 मिलियन वर्ग फुट से अधिक है, जिसमें से टियर 1 शहरों में 72 मिलियन वर्ग फुट से अधिक है। अनुमान है कि कैलेंडर वर्ष 2027 के अंत तक टियर 1 स्टॉक लगभग 124 मिलियन वर्ग फुट तक बढ़ जाएगा।

इस ऑफर के बुक रनिंग लीड मैनेजर आईसीआईसीआई सिक्योरिटीज लिमिटेड और जेएम फाइनेंशियल लिमिटेड हैं।

इक्विटी शेयरों को बीएसई और एनएसई पर सूचीबद्ध करने का प्रस्ताव है।

अंत मे विद्यालय के सचिव श्री अजय गुप्ता ने उपस्थित अतिथियों का आभार व्यक्त किया

- **वार्ड 18 के उप चुनाव में महावीर जैन ने भाजपा से दाखिल किया नामांकन।**
- **पूर्व विधायक निर्मल कुमावत व कार्यकर्ताओं की मौजूदगी में भरा फॉर्म**

चमकता राजस्थान

फुलेरा (दामोदर कुमावत)। नगर पालिका वार्ड 18 के उप चुनाव में भाजपा की और से महावीर प्रसाद जैन ने पूर्व विधायक निर्मल कुमावत व कार्यकर्ताओं की मौजूदगी में गुरुवार को पालिका पहुंचकर निर्वाचन अधिकारी सुमन चौधरी को नामांकन पत्र सौंपा। नामांकन से पहले बड़ी संख्या में पदाधिकारी और कार्यकर्ता भाजपा मण्डल अध्यक्ष प्रणव अग्रवाल के नेतृत्व मे मुख्य बाजार में होते हुए एक रैली के रूप मे नगर पालिका कार्यालय पहुंचे,पूर्व विधायक निर्मल कुमावत ने बताया कि महावीर जैन एक कर्मठ ईमानदार एवं सेवाभावी कार्यकर्ता के साथ-साथ आमजन से जुड़ा हुआ होने के कारण तथा पार्टी ने महावीर जैन को वार्ड 18 के उप चुनाव का प्रत्याशी बनाया है। इस अवसर पर भाजपा के कार्यकर्ताओं के साथ वार्ड वासी भी इनके समर्थन में नामांकन दरख़ल करने तक पहुंचे।

बच्चों के सर्वांगीण विकास में बाल मेले आवश्यक सांसद मंजू शर्मा

- **माता-पिता की बाद अध्यापक की शिक्षा व संस्कार प्रदान करते हैं महापौर कुसुम यादव**

चमकता राजस्थान। जयपुर। जयपुर राजेन्द्र पब्लिक सैकंडरी स्कूल एवं सेन्ट एस एस पब्लिक स्कूल द्वारा बाल मेले का आयोजन कंवर नगर स्थित झूलेलाल मंदिर के पार्क में किया गया इस मेले में जयपुर की लोकसभा सांसद श्रीमती मंजू शर्मा, महापौर हेरिटेज कुसुम यादव, पूर्व महापौर एवं भाजपा नेता ज्योति खंडेलवाल, सुभाष चौक थाना इन्चार्ज सुभाष यादव, पार्षद अनिता जैन, पार्षद रजत विश्नोई, पार्षद मो फारुख, भाजपा नेता रवि नय्यर, पूर्व पार्षद एवं भाजपा नेता सोहनलाल ताम्बी, पूर्व पार्षद सुरेंद्र सिंह रॉबिन, शिक्षाविद रामड़गायच, सुनील जैन, रामस्वरूप तांबी, दैनिक थॉट्स ऑफ़ इंडिया के संपादक अविनाश शर्मा, लेखा विद के संपादक वाचस्पति शर्मा जैसी हस्तियों ने शिरकत की।

इस मेले में बालक बालिकाओं के द्वारा अलग अलग व्यंजनों की स्टाल्स लगाई गई एवं विभिन्न प्रकार के खेल कूद व ज्ञानोपार्जन प्रतियोगिताओ आकर्षित झूले का आयोजन किया गया

इस बाल मेले को मुख्यत तुलसी दिवस के रूप में मनाया गया और पोस्टर का विमोचन किया गया, मेले में विजेताओं को पुरुस्कार भी वितरित किये गए। लोकसभा सांसद श्रीमती मंजू शर्मा ने मेले के उपयोगिता को बताते हुए कहा इससे बच्चो के सर्वांगीण विकास में मदद मिलती है और ऐसे मेलों में आपसी सदभाव की भावना जागृत प्रबल होती है

महापौर श्रीमती कुसुम यादव ने अपने उदबोधन में कहा कि माता के बाद अध्यापक ही बच्चो को शिक्षा व संस्कार प्रदान करते है शिक्षाविद एवं संस्थापक शंभू दयाल गुप्ता ने सभी अतिथियों का स्वागत किया।

उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने सिविल लाइंस स्थित कार्यालय में की कार्यकर्ताओं से मुलाक़ात

चमकता राजस्थान। जयपुर। उपमुख्यमंत्री दीया कुमारी ने गुरुवार को सिविल लाइंस स्थित कार्यालय पर प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों से पधारे भाजपा कार्यकर्ताओं एवं आमजन से मुलाकात कर उनकी समस्याएं सुनी व संबंधित अधिकारियों को आवशयक दिशा-निर्देश दिए।

बाप में महिला सम्मेलन संपन्न, 200 महिलाओं ने भाग लिया

महिलाओं की बीमारियों के बारे में पुरुषों को भी जानकारी होना जरूरी

चमकता राजस्थान

फलोदी। दूसरा दशक के तत्वावधान में बाप में महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में बाप सहित आठ गांव-ढाणियों की करीब दो सौ महिलाओं ने भाग लिया ।

श्रीविश्वकर्मा सुथार एकता फाउंडेशन के सहयोग से आयोजित सम्मेलन में एक सुर में सभी महिलाओं ने कहा कि महिलाओं की माहवारी व प्रजनन सम्बंधी समस्याओं व बीमारियों के बारे में पुरुषों को जागरूक करने की

जरूरत है । सामुदायिक केंद्र की प्रभारी डॉ सुनीता ने इस पर सहमति व्यक्त करते हुवे कहा कि पुरुष को जानकारी होना बहुत जरूरी है । मैं महिला रोगी के साथ आने वाले हर पुरुष को पास बुलाकर समस्याओं से अवगत कराती हूँ । दूसरा दशक के परियोजना निदेशक मुरारी लाल थानवी ने कहा कि घर में ऐसा माहौल हो जिससे माहवारी के मुद्दे पर खुलकर बात हो सके।

डॉ सुनीता ने संबोधित करते हुए कहा कि अधिकतर महिलाओ में सफेद पानी की समस्या होती है लेकिन वह इसके बारे में किसी से बात नहीं करती । सफेद पानी की समस्या माहवारी स्वच्छता के अभाव में होती है, इसके कारण कैंसर भी हो सकता है। डॉ सुनीता ने संस्थागत प्रसव के लिए प्रोत्साहित करते हुए लाडो योजना की जानकारी दी । श्रीविश्वकर्मा सुथार एकता फाउंडेशन के अध्यक्ष भोमराज सुथार ने सफेद पानी(ल्यूकोरिया) की समस्या की भयावहता अवगत कराते स्थानीय उदाहरण भी दिए। भोमराज ने मघाराम कुलरिया फाउंडेशन के सहयोग से बाप के सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र पर संचालित मातृत्व स्वास्थ्य देखभाल अभियान के बारे में जानकारी दी । कार्यक्रम का संचालन प्रीति राठौड़ ने किया । मनु, मैना, ममता, बशीरों, कंचन, अमरू, राखी, कीर्ति आदि ने सहयोग किया । प्लास्टिक का उपयोग ना करने के संदेश के साथ फलोदी के सिलाई प्रशिक्षण शिविर की महिलाओं द्वारा तैयार की गई कपड़े की थैली निःशुल्क प्रदान की गई ।

महिलाओं ने डॉक्टर से पूछे अनेक प्रश्न

सफेद पानी क्यों आता है ?

क्या पीरियड के दौरान पेट दर्द हो तो कितनी बार गोली ले सकते हैं ?

पीरियड को कुछ समय के लिए टालने के लिए क्या टेबलेट ले सकते हैं?

क्या पीरियड में सिर धोना चाहिए?

गर्भपात होने के क्या कारण हैं ?

सम्मेलन इन गांव-ढाणियों की महिलाओं ने भाग लिया

सम्मेलन में बाप, जागरिया, कानासर, कानासर ढाणी, घटोर, गाड़ना, मानचितीया, खालतो की ढाणी, संवारा गांव, फलोदी आदि गांवों की महिलाएं शामिल हुई ।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक अभय सिंह चौहान के लिए एम बी प्रिंटर्स, सी 74 सुदर्शन पूरा, जयपुर से मुद्रित एवं 1ए देवी नगर विस्तार, देवी नगर गली नं. 6 जयपुर 302019 से प्रकाशित। सम्पादक : अभय सिंह चौहान,
मोबाइल : 9314505000 (पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार) संपादक : खलील कुरैशी, मोबाइल : 7891542929